पर्यावरण पर केंद्रित विशेष आलेख.

गोवर्धन यादव

अनुक्रम.

एक अजुबी प्यास है फ़ागुन तेरो नाम

वसंत-पंचमी के बाद से ही गाँवों में फ़ाग-गीत गाए जाने की शुरुआत हो जाती है .साज सजने लगते हैं और महफ़ीलें जमने लगती हैं. रात्रि की शुरुआत के साथ ढोलक की थाप और झांझ-मंजीरों की झनझनाहट के साथ फ़ाग गाने का सिलसिला देर रात तक चलता रहता है. हर दो-चार दिन के अन्तराल के बाद फ़ाग गायी जाती है और जैसे-जैसे होली निकट आती जाती है,लोगों का उत्साह देखते ही बनता है.

अब न तो वे दिन रहे और न ही वह बात रही. तेजी से बढते शहरीकरण और दूषित राजनीति के चलते आपसी सौहार्द और सहयोग की भावना घटती चली गई और आज स्थिति यह है कि फ़ाग सुनने को कान तरसते हैं.

फ़ाग की बात जुबान पर आते ही मुझे अपना बचपन याद हो आता है. बैतुल जिले की तहसील मुलताई,जहाँ से पतीत-पावनी सूर्यपुत्री ताप्ती का उद्गम स्थल है,मेरा जन्म हुआ, और जहाँ से मैंने मैट्रीक की परीक्षा पास की, वह पुराना दृष्य आँखों के सामने तैरने लगता है. जमघट जमने लगती है, ढोलक की थाप, झांझ-मंजीरों की झनझनाहट ,टिमकी की टिमिक-टिन, से पूरा माहौल खिल उठता है. फ़िर धीरे से आलाप लेते हुए खेमलाल यादव फ़ाग का कोई मुखडा उठाते हैं और उनके स्वर में स्वर मिलने लगते है. दमडूलाल यादव,दशरथ भारती, सेठ सागरमल, फ़कीरचंद यादव,श्यामलाल यादव, सोमवार पुरी गोस्वामी, गेन्दलाल पुरी खूसटसिंह, पलु भारती,लोथ्या भारती, भिक्कुलाल यादव (द्वय)और उनके साथियों का स्वर हवा में तैरने लगता हैं. बीच-बीच में हंसी-ठिठौली का भी दौर चलता रहता है. शाम से शुरु हुए इस फ़ाग की महफ़िल को पता ही नहीं चल पाता कि रात के दो बज चुके हैं. फ़ाग का सिलसिला यहाँ थम सा जाता है,अगले किसी दिन तक के लिए.

जिस दिन होलीका -दहन होना होता है, बच्चे-बूढे-जवान मिलकर लकडियाँ जमाते हैं. गाय के गोबर से बनी चाकोलियों की माला लटका दी जाती है. रंग-बिरंगे कागजों की तोरणें टंगने लगती है. लकडियों के ढेर के बीच ऊँचे बांस अथवा बल्ली के सिरे पर बडी सी पताका फ़हरा दी जाती है. बडी गहमा-गहमी का वातावरण होता है इस दिन. बडॆ से सिल पर भाँग पीसी जा रही होती है. कोई दूध औटाने के काम के जुटा होता है. जितने भी लोग वहाँ जुडते हैं, सभी के पास कोई न कोई काम करने का प्रभार होता है.

जैसे-जैसे दिन ढलने को होता है,वैसे-वैसे काम करने की गति भी बढती जाती है. साझं घिर जाने के साथ ही एक चमकीला चाँद आसमान पर प्रकट होता है और चारों ओर दुधिया रंग अपनी छटा बिखेरने लगता है. अब होलीका दहन वाले स्थान के पास बडी दरी बिछा दी जाती है और लोगों का जमावडा होना शुरु हो जाता है. टिमकी,ढोलक,झांझ,मंजीरें,करताल बजने लगते हैं. फ़ाग गायन शैली सामूहिक गायन के रुप में होता है. फ़ाग गायन

की विषय वस्तु द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा बृज ग्वालबालों एवं गोपियों के साथ हास-परिहास की शैली प्रच्चलित है.सबसे पहले श्री गणेश का सुमरन किया जाता है. फ़िर कान्हा और राधा के बीच खेली जाने वाली रंग-गुलाल-पिचकारी के मद्‌धुर भावों को पिरोती फ़ाग गायन की शुरुआत होती है.-

(१) "चली रंग की फ़ुहार,पिचकारियों की मार
कान्हा तू न रंग ड्डार, काहे सताए रंग डार के
राधा पडॆ तोरे पैयां गिरधारी न तू मारे भर-भर पिचकारी
भींगी चुनरी हमार काहे दिया रंग डार
मैं तो गई तोसे हार,काहे सताये रंग डार के"

(२) सारी चुनरी भिंगो दी तूने मोरी
मेरे सर की मटकिया फ़ोडी
कहूं जा के नंद द्वार तोरो लाला है गंवार
करे जीना दुश्वार,काहे सताये रंग डार के"

(३) सारे बृज मे करे ठिठौली
लेके फ़िरे सारे ग्वालों की टॊली
किन्हे गाल मोरे लाल
डाला किस-किस पे गुलाल
मैया ऎसा तेरा लाल,काहे सताये रंग डार के.

फ़ाग गायन का क्राम चलता रहता. स्त्री-पुरुष-बच्चे घरों से निकल आते पूजन करने. फ़िर देर रात होलिका-दहन का कार्यक्रम शुरु होता. बडा बुजुर्ग लकडी-कंडॆ के ढेर में आग लगात्ता और इस तरह होलिका दहन की जाती. पौराणिक मान्यता के अनुसार" हिरणाकश्यप" द्वारा अपने भक्त पुत्र प्रहलाद को "होलिका" में जलाने के प्रयास के असफ़ल हो जाने पर तत्कालीन समाज द्वारा मनाए गए आंदोलन से इसे जोडा जाता है. होलिका दहन के बाद लोग अपने-अपने घर की ओर रवाना हो जाते, इस उत्साह के साथ कि अगले दिन जमकर रंग बरसाएंगे.

सुबह से ही सारे मुहल्ले के लोग बाबा खुसट के यहाँ इकठ्ठे होते. फ़ाग गाने का क्रम शुरु हो जाता. फ़िर आती रंग डालने की बारी. सुबह से ही लोग टॆसू के फ़ूलों का रंग उतारकर पात्रों में जमा कर लेते. इसी रंग से सभी रंग कर सराबोर हो जाते. फ़िर सभी को कुंकुम-रोली लगाई जाती. ठंडाई का दौर भी चल पडता. इस अवसर पर बने पकवानों का भी लुफ़्त उठाया जाने लगता.

फ़ाग-गायन मंडली हंसी-ठिठौली करती बाबा दमडूलाल के घर जा पहुँचती.वहाँ पहले से ही टॊली के स्वागत-सत्कार की व्यवस्था हो चुकी होती है.एक दिन पहले से ही आंगन को गोबर से लीपकर तैयार कर दिया जाता है. इस दिन बिछायत नहीं की जाती. लोग घेरा बनाकर बैठ जाते. फ़ाग उडती रहती. रंग-गुलाल बरसता रहता. ठंडाई का दौर चलता रहता. पकवानों का रसास्वादन भी चलता रहता. घर का प्रमुख लोगों के सिर-माथे पर तिलक-रोली

करता और इस तरह फ़ाग के राग उडाती टॊली आगे बढ जाती. सबसे मिलते-जुलते, रंग -गुलाल में सराबोर होती टोली के सदस्य, अपने -अपने घरों की ओर निकल पडते.

नहा-धोकर लोग चार बजे के आसपास होलिका-दहन वाले स्थान पर आ जुडते. फ़ाग उडने लगती. फ़िर मंडली गाते-बजाते मेघनाथ-बाबा के दर्शनार्थ के लिए बढ जाती.वहाँ उस दिन अच्छा खासा मेला लग जाता. इस तरह सारे गांव की मंडलियां वहाँ जुडने लगती है. लोग एक दूसरे को गले लगाते हैं. इस तरह प्रेम-सौहार्द की भावना से ओतप्रोत यह त्योहार सम्पन होता.

---

2 लोक साहित्य में पर्यावरण चेतना.

लोकसाहित्य पढने-लिखने में एक शब्द है, पर वह वस्तुतः यह दो गहरे भावों का गठबंधन है. "लोक" और "साहित्य"एक दूसरे के संपूरक, एक दूसरे में संश्लिष्ट. जहाँ लोक होगा, वहां उसकी संस्कृति और साहित्य होगा. विश्व में कोई भी ऎसा स्थान नहीं है, जहां लोक हो और वहां उसकी संस्कृति न हो.

मानव मन के उद्गारों व उसकी सूक्ष्मतम अनुभूतियों का सजीव चित्रण यदि कहीं मिलता है तो वह लोक साहित्य में ही मिलता है. यदि हम लोकसाहित्य को जीवन का दर्पण कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी. लोक ~साहित्य के इस महत्व को समझा जा सकता है कि लोककथा को लोक साहित्य का जनक माना जाता है और लोकगीत को काव्य की जननी. लोक साहित्य मे कल्पना प्रधान साहित्य की अपेक्षा लोकजीवन का यथार्थ सहज ही देखने में मिलता है.

लोकसाहित्य हम धरतीवासियों का साहित्य है, क्योंकि हम सदैव ही अपनी मिट्टी, जलवायु तथा सांस्कृतिक संवेदना से जुड़े रहते हैं. अतः हमें जो भी उपलब्ध होता है वह गहन अनुभूतियों तथा अभावों के कटु सत्यों पर आधारित होता है, जिसकी छाया में वह पलता और विकसित होता है. इसीलिए लोक साहित्य हमारी सभ्यता का संरक्षक भी है.

साहित्य का केन्द्र लोकमंगल है. इसका पूरा ताना- बाना लोकहित के आधार पर खड़ा है. किसी भी देश अथवा युग का साहित्यकार इस तथ्य की उपेक्षा नहीं कर सकता. जहाँ अनिष्ठ की कामना है,वहाँ साहित्य नहीं हो सकता. वह तो प्रकृति की तरह ही सर्वजनहिताय की भावना से आगे बढ़ता है.

संत शिरोमणि तुलसीदास की ये पंक्तियां" कीरत भनित भूरिमल सोई-सुरसरि के सम सब कह हित होई" अमरत्व लिए हुए है. गंगा की तरह ही साहित्य भी सभी का हित सोचता है. वह गंगा की तरह पवित्र और प्रवाहमय है, वह धरती को जीवन देता है...श्रृंगांर देता है और सार्थकता भी. प्रकृति साहित्य की आत्मा है. वह अपनी मिट्टी से, अपनी जमीन से जुड़ा रहना भी साहित्य की अनिवार्यता समझता है. मिट्टी में सारे रचनाकर्म का" अमृतवास´ रहता है. रचनाकर उसे नए-नए रुप देकर रुपायित करता है. गुरु-शिष्य परम्परा हमें प्रकृति के उपादानों के नजदीक ले आती है. जहाँ कबीर का कथन प्रासंगिक है-´गुरु कुम्हार सिख कुंभ गढी-गढी काठै खोट- अन्तर हाथ सहार दे बाहर वाहे खोट" संस्कारों से दीक्षित व्यक्ति सभी प्रकार के दोषों-खोटों से मुक्त रहता है. इसमें लोकहित की भावना समाहित है. मलूकदास भी इन्सानियत की परिभाषा अपने शब्दों में यूं देते हैं-"मलुका सोई पीर है,जो जाने पर पीर-जो पर पीर न जानई,सो काफ़िर बेपीर." दूसरों की पीड़ा समझने वाला इन्सान पशु-पक्षी का भी अहित नहीं सोच सकता. उसे वनस्पति के प्रति मैत्री का वह विस्तार साहित्य ही तो है.

जिज्ञासु व्यक्ति कुछ न कुछ सोचने की चेष्टा करता है. इस प्रकृति के सहचर्य से उसने बहुत कुछ सीखा है. उस काल के वेदज्ञ ब्राहमण चौदह विद्याओं का अध्ययन करना अपना अभीष्ठ मानते थे. सोलह कलाओं और चौदह विधाओं के अलावा वे संगीत, सामुद्रिक, ज्योतिषि, वेदाध्ययन काव्य, भाषाशास्त्र, पशुभाषा ज्ञान, तैरना,धातु विज्ञान, रसायन, रत्न परख, चातुर्य एवं अंग विज्ञान आदि अनेक विषयों में गहरी रूचियाँ रखते थे. इस बात के साक्षी है पुरातन भारतीय- ग्रंथ जो समय की सीमा को पार कर चुके हैं .मनुष्य के संचित ज्ञान और अनुभव के पहले पुस्तकाकार स्वरुप की याद आते ही दृष्टि स्वमेव ही वेदों की ओर चली जाती है. वेद वे वाङ.मय जो ज्ञान कोष के रुप में सदियों से हमारा साथ देते आए हैं. ऋगवेद को सृष्टि विज्ञान की प्रथम पुस्तक होने का गौरव प्राप्त है. जल, अग्नि, वायु, मृदा, चारों वेदों की रचना के पीछे ये ही तत्व प्रमुख रुप से काम करते हैं. ऋगवेदे मे अग्नि के रुपान्तरण कार्य और गुणों की व्याख्या है., तो यजुर्वेद में विविध रुपों और गुण धर्मों की. सामवेद का प्रधान तत्व जल है, तो अथर्ववेद पृथ्वी(मृदा) पर केन्द्रित है. पांचव तत्व आकाश तत्व है. सृष्टि की रचना करने वाले उस महान कुंभकार ने इन्हीं पांचों तत्वों के कच्चे माल को मिलाकर एक ऐसी ही रचना की ,जो बेजोड़ है.

हमारी धरती के अस्तित्व का जो आधार है जिसे भारतीय मेधा ने भूमि माँ कहकर अभिनन्दन के स्वर अर्पित किए_"माताभुमिः पुत्रोव्है पृथिव्या". अर्चन-अभिनन्दन के इन् स्वरों में बहुत ही सार्थक भावभीना स्वर है. यह वैदिक पृथ्वी समूह माँ पृथ्वी की स्तुति का पावन सूत्र, प्रकृति प्रेम की अद्भुत मिसाल, पर्यावरण विमर्श का महत्वपूर्ण घोषणा-पत्र,

पर्यावरण प्रतिष्ठा का सारस्वत अनुष्ठान और उसके संरक्षण के लिए समर्पित शिव संकल्प, आसुरी वृत्तियों के अस्वीकार तथा दैवी वृत्तियों के स्वीकार का घोषणा-पत्र है. यह पृथ्वी की समस्त निधियों के विवेक सम्मत प्रयोग का आग्रही है. यह प्रेम के लिए नहीं, श्रेय के लिए समर्पित शोध का पक्षधर है. यह सामाजिकता,मंगलमयता में लीन हो जाने का आव्हान है. आज के पर्यावरण संकट की समस्त युक्तियों का एक सूत्रीय समाधान है. बीस कांडों, इकतीस सूत्रों और पाँच हजार नौ सौ इकहत्तर मंत्रों का महाकोष है. व्यक्ति सुखी रहे, दीर्घायु प्राप्ति करे. सदनीति पर चले, पशु-पक्षियों, वनस्पतियों एवं जीव जगत के साथ साहचर्य रहे, इन्हीं कामनाओं से ओत-प्रोत यह अद्भुत ग्रंथ है.

लोक चेतना तो संस्कृति और साहित्य की परिचालक शक्ति मानी जाती है.किन्तु वर्तमान मशीनी और कम्प्युटरी समाज से लोक चेतना शून्य होती जा रही है. आज जरुरी है कि साहित्य का मूल्यांकन लोकजीवन, लोक संस्कृति की दृष्टि से किया जाना चाहिए. जो लोकसाहित्य लोकजीवन से जुड़ा होगा वही जीवन्त होगा. माना भूमिः प्रयोग है पृथीव्याः अथर्ववेद कि ऋचा का महाप्राण है. लोकजीवन इस ऋचा के आशय का प्रतिनिधित्व युगों से करता आ रहा है.यही लोक साहित्य की आधार शिला है. लोकसाहित्य परम्परा पर आधारित होता है. अतः अपनी प्रकृति मे विकाश- शील है. इसमें नित्यप्रति परिवर्तन की संभावना बनी रहती है. इसका सृजन युगपीडा एवं सामाजिक दवाब को भी निरन्तर महसूस करता रहता है.

सांस्कृतिक परिस्थितियों का निर्वहन ही सभ्यता कहलाती है. कुछ विद्वान सभ्यता और सँस्कृति को एक ही मानते हैं और उसके विचार में सभ्यता और संस्कृति का विकास समान रुप से होता है. काफ़ी गहराई से चिंतन करें तो सभ्यता का ज्यों-ज्यों विकास होता है, त्यों-त्यों संस्कृति का ह्रास होता है. खान-पान, पहनावा सब बदलता जाता है और उसका प्रत्येक पर प्रभाव पड़ता है.

लोकसाहित्य में लोककथा-लोकनाटक तथा लोकगीतों के रखा जा सकता है. जिसमें जनपदीय भाषाओं का रसपूर्ण-कोमल भावनाओं से युक्त साहित्य होता है. भारतीय लोक साहित्य के मर्मज्ञ आर.सी टेम्पुल के मतानुसार लोक साहित्य कि साहित्यिक दृष्टिकोण से विवेचना करना उसी सीमा तक करना उचित होगा, जिस सीमा तक उसमें निहित सुन्दरता और आकर्षण को किसी प्रकार की हानि न पहुँचे. यदि लोक साहित्य की वैज्ञानिक विवेचना की जाती है तो मूल विषय नीरस और बेजान हो जाएगा. लोक के हर पहलू में संस्कृति के दिव्य दर्शन होते हैं. जरुरत है तीक्ष्ण दृष्टि और सरल सोच की. लोक साहित्य के उद्भट विद्वान देवेन्द्र सत्यार्थी ने साहित्य के अटूट भंडार को स्पष्ट तौर पर स्वीकार करते हुए कहा था-" मैं तो जिस जनपद में गया, झोलियां भरकर मोती लाया.

परलोक की धारणाएँ भी इन्हीं से जुड़ी है. सभी कर्मकाण्ड,पूजा-अनुष्ठान तथा उन्नत सांस्कृतिक समाज में मनुष्य के आचरण का निर्धारण इसी लोक में होता है. लोक हमारी सामाजिकता की गंगोत्री है और सभ्यता का प्रवेश द्वार भी. भारतीय जनमानस को श्रीमद भगवद्गीता ने जितना प्रभावित किया उतना शायद किसी अन्य पुस्तक ने नहीं किया. वैष्णवी तंत्र ने गीता की जो व्याख्या की है, उसमें प्रतीक के रूप में पशु जीवन का महत्व प्रतिपादित होता है.

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपाल नन्दनः
पार्थो वत्स सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत.!

अर्थात उपनिषद गाय है ,कृष्ण उनको दुहने वाले है, अर्जुन बछड़ा है और गीता दूध है. गीता मे प्रकृति को ईश्वर की माया के रूप में दर्शाया है. गीता के कुछ स्लोकों को (अर्थ) रेखांकित किया जा सकता है. जो तेज सूर्य और चन्द्रमा में है, उसे मेरा ही तेज मानों. मैं ही पृथ्वी में प्रवेश करके सभी भूत-प्राणियों के धारण करता हूँ. चन्द्रमा बनकर औषधियों का पोषण करता हूँ. जठ-राग्नि बनकर प्राणियों की देह मे प्रविष्ठ हूँ. प्राणवायु-अपानवायु से संयुक्त होकर चारों प्रकार से भोजन किए हुए प्राणियों के अन्न को पचाता हूँ. संपूर्ण भूतों (प्राणियों) के ह्रदय क्षमता में निवास करता हूँ.(अध्याय.१५)

श्रीकृष्ण ने अपनी प्रकृति को अष्टकोणी बताया है. इसमें पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं आकाश के साथ-साथ मन-बुद्धि एवं अहंकार की गणणा की गई है. अपनी बाल-लीलाओं के माध्यम से उन्होंने जो दिव्य संदेश दिया उसका व्यापक प्रभाव लोकजीवन तथा लोकपरम्पराओं पर पड़ा. उस दिव्य संदेश के पीछे तात्पर्य यह था की वनस्पति, नदियां, पहाड़, पशु-पक्षी, गौवें, जलचर और मनुष्य सभी इस प्रकृति के अंगीभूत स्वरुप हैं और सबका रक्षण,पोषण और विकास जरुरी है.

पर्व और त्योहारों के इतिहास में हमारे देश की संस्कृति और सभ्यता का इतिहास सृष्टि वस्तुतः सारे त्योहार ऎसे हैं जो प्रकृति की गोद में और प्रकृति के संरक्षण में मनाए जाते हैं. जैसे गोवर्धन पूजा, आवंला पूजन, गंगा सप्तमी, माह कार्तिक मे तुलसी पूजन आदि.

ये सभी पर्व हमें अपनी प्राकृतिकता से सह संबंधो की परम्पराओं की याद दिलाते हैं .ऐसे पर्व जो प्रकृति के विभिन्न घटकों को पूजने के दिन के रुप में मनाए जाते है, उसी पर्व के अवसर पर सम्पन्न क्रिया -कलाप और समारोह प्रकृति-प्रेम एवं प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता का नया वातावरण हमें प्रदान कर पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिए उत्प्रेरित करते हैं. प्रकृति घटकों के सहसम्बन्ध हमें नई उमंग और प्रकृति प्रेम के नए उत्साह का अनुभव कराता है. भौतिक ,सांस्कृतिक एवं लोभ मानसपटल पर नहीं होंगे तो स्वार्थमय भौतिक संस्कृति जैसे प्रदूषण प्रकट नहीं होंगे और पर्यावरण शुद्ध बना रहेगा.

विभिन्न तथ्यों एवं लोकजीवन की शैली के आधार पर निष्कर्ष में कह सकते हैं कि वृक्ष हमारी संस्कृति के विभिन्न अंग रहे हैं .भारत कृषि प्रधान देश है. अतः मृदा का संरक्षण आवश्यक है. प्राकृतिक अवस्था में मैदानी एवं पहाड़ी स्थानों पर लगे वृक्षों की जड़े जमीन को पकड़े रहती है,जिससे पानी का प्रवाह एवं हवा संतुलित रहती है. वृक्षों के अभाव में हवा एवं पानी पर नियंत्रण नहीं रहने से भूमि के रेगिस्थान में परिवर्तन होने की प्रबल संभावनाएं बनती जा रही है. वनों की कटाई न करने के प्रति जन चेतना फ़ैलाने के उद्देश्य से आंदलनों को शुरु किया जाना चाहिए.

मनुष्य की प्रदूषित मानसिकता प्रकृति को किसी न किसी रुप में प्रदुषित करती है. अस्तु प्रकृति के प्रदूषण को रोकने के लिए संस्कृति की आत्मा,जिसमें प्रकृति की गूँज है,से अनुप्राणित होकर शिक्षा प्रदान करनी चाहिए. अतः शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत बालक-बालिकाओं को परम्परागत भारतीय शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए.

पूर्व की पीढ़ियों ने अपने समय में प्रकृति का पूर्ण विकास कर उनको भौतिक संपत्ति के रुप में बदलकर अगली पीढ़ियों को प्रदान किया जाना है और यह माना है कि आने वाली पीढ़ी उन पूर्वजों का उपकार मानेगी, लेकिन वर्तमान पीढ़ी की तो भावी मानव के लिए जटिल समस्याएं और प्रकृति के विध्वंस का आधार छोड़कर जाने की संभावनाएं बन रही है. आज रेगिस्थान बढ़ रहे हैं. जीव-जंतुओं की बहुत सी प्रजातियां लुप्त हो रही है. प्रकृति के वर्तमान दोहन के भविष्य की आवश्यकताओं को दृष्टि में रखकर ही अपनी योजनाओं का निर्माण करना चाहिए

....

3

फ़ागुनी-गीत

फ़ागुनी-गीत, लोक साहित्य की एक महत्वपूर्ण गीत विधा है, जो लोक हृदय में स्पंदन करने वाले भावों, सुर, लय, एवं ताल के साथ अभिव्यक्त होता है. इसकी भाषा सरल, सहज और जन- जीवन के होंठों पर थिरकती

रहती है. इसका क्षेत्र बहुत व्यापक है. फ़ागुन के माह में गाए जाने के कारण हम इसे फ़ागुनी-गीत कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी.

वसंत पंचमी के पर्व को उल्लासपूर्वक मनाए जाने के साथ ही फ़ागुनी गीत गाए जाने की शुरुआत हो जाती है. फ़ागुन का अर्थ ही है मधुमास. मधुमास याने वह ऋतु जिसमें सर्वत्र माधुर्य ही माधुर्य हो. सौंदर्य ही सौंदर्य हो. वृक्ष पर नए-नए पत्तों की झालरें सज गई हों, कलिया चटक रही हों, शीतल सुगंधित हवा प्रवहमान हो रही हो, कोयल अपनी सुरीली तान छेड रही हो. लोकमन के आल्हाद से मुखरित वसंत की महक और फ़ागुनी बहक के स्वर ही जिसका लालित्य हो. ऎसी मदहोश कर देने वाली ऋतु में होरी, धमार ,फ़ाग,की महफ़िलें जमने लगती है. रात्रि की शुरुआत के साथ ढोलक की थाप और झांझ-मंजिरों की झनझनाहट के साथ फ़ाग-गायन का क्रम शुरु हो जाता है.

वसंत मे सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण में आ जाता है. फ़ल-फ़ूलों की नई सृष्टि के साथ ऋतु भी अमृतप्राणा हो जाती है, इसलिए होली के पर्व को "मन्वन्तरारम्भ" भी कहा गया है. मुक्त स्वच्छन्द परिहास का त्योहार है यह. नाचने, गाने हँसी, ठिठौली और मौज-मस्ती की त्रिवेणी भी इसे कहा जा सकता है. सुप्त मन की कन्दराओं में पडॆ ईष्या-द्वेष, राग-विराग जैसे निम्न विचारों को निकाल फ़ेकने का सुन्दर अवसर प्रदान करने वाला पर्व भी इसे हम कह सकते हैं.

रंग भरी होली जीवन की रंगीनी प्रकट करती है. होलिकोत्सव के मधुर मिलन पर मुँह को काला-पीला करने का जो उत्साह-उल्लास होता है, रंग की भरी बाल्टी एक-दूसरे पर फ़ैंकने की जो उमंग होती है, वे सब जीवन की सजीवता प्रकट करते है. वास्तव में होली का त्योहार व्यक्ति के तन को ही नहीं अपितु मन को भी प्रेम और उमंग से रंग देता है. फ़िर होली का उल्लेख हो तो बरसाना की होली को कैसे भूला जा सकता है जहाँ कृष्ण स्वयं राधा के संग होली खेलते हैं और उसी में सराबोर होकर अपने भक्तों को भी परमानंद प्रदान करते है.

फ़ाग में गाए जाने वाले गीतों में हल्के-फ़ुल्के व्यग्यों की बौछार होंठॊं पर मुस्कान ला देती है. यही इस पर्व की सार्थकता है. लोकसाहित्य में फ़ाग गीतों का इतना विपुल भंडार है, लेकिन तेजी से बदलते परिवेश ने काफ़ी कुछ लील लिया है. आज जरुरत है उन सब गीतों को सहेजने की और उन रसिक-गवैयों की, जो इनको स्वर दे सकें.

जैसा कि आप जानते ही हैं कि इस पर्व में हँसी-मजाक-ठिठौली और मौज-मस्ती का आलम सभी के सिर चढकर बोलता है. इसी के अनुरुप गीतों को पिरोया जाता है. फ़ाग-गीतों की कुछ बानगी देखिए.

मैं होली कैसे खेलूंगी या सांवरिया के संग
कोरे-कोरे कलस मंगाए, वामें घोरो रंग
भर पिचकारी ऎसी मारी,सारी हो गई तंग //मैं
नैनन सुरमा.दांतन मिस्सी, रंग होत बदरंग
मसक गुलाल मले मुख ऊपर,बुरो कृष्ण को संग //मैं

तबला बाजे,सारंगी बाजे और बाजे मिरदंग
कान्हाजी की बंसी बाजे राधाजी के संग//मैं
चुनरी भिगोये,लहंगा भिगोये,भिगोए किनारी रंग
सूरदास को कहाँ भिगोये   काली कांवरी अंग//मैं

(२) मोपे रंग ना डारो सांवरिया,मैं तो पहले ही अतर में डूबी लला
कौन गाँव की तुम हो गोरी,कौन के रंग में डूबी भला
नदिया पार की रहने वाली,कृष्ण के रंग में डूबी भला
काहे को गोरी होरी में निकली, काहे को रंग से भागो भला
सैंया हमारे घर में नैइया   ,उन्हई को ढूंढन निकली भला
फ़ागुन महिना रंग रंगीलो,तन- मन सब रंग डारो भला
भीगी चुनरिया सैंइयां जो देखे,आवन न देहैं देहरी लला
जो तुम्हरे सैंया रुठ जाये,रंगों से तर कर दइयो भला.

(३) आज बिरज मे होरी रे रसिया
होरि रे रसिया बर जोरि रे रसिया

(४)ब्रज में हरि होरि मचाई
होरि मचाई कैसे फ़ाग मचाई

बिंदी भाल नयन बिच कजरा,नख बेसर पहनाई

छीन लई मुरली पितांबर   ,सिर पे चुनरी ओढाई
लालजी को ललनी बनाई.-(ब्रज में...........)

<u>हँसी-ठिठौली पर कुछ पारंपरिक रचनाएँ</u>

(१)मोती खोय गया नथ बेसर का, हरियाला मोती बेसर का
अरी ऎ री ननदिया नाक का बेसर खोय गया
मोहे सुबहा हुआ छोटे देवर का,हरियाला मोती बेसर का
(२)अनबोलो रहो न जाए,ननद बाई, भैया तुम्हारे अनबोलना
अरे हाँ....... भौजी मेरी रसोई बनाए,नमक मत डारियो..
अरे आपहि बोले झकमार
अरे हाँ ननद बाई,अलोने-अलोने ही वे खाए .....
अरे मुख़ से न बोले बेईमान
(३) कहाँ बिताई सारी रात रे...सांची बोलो बालम

मेरे आँगन में तुलसी को बिरवा, खा लेवो ना तुलसी दुहाई रे
काहे को खाऊँ तुलसी दुहाई, मर जाए सौतन हरजाई रे...
सांची बोलो बालम..........

(४) चुनरी बिन फ़ाग न होय, राजा ले दे लहर की चुनरी...(आदि-आदि)

हँसी की यह खनक की गूंज पूरे देश में सुनी जा सकती है. इस छटा को देखकर यही कहा जा सकता है कि होली तो एक है,लेकिन उसके रंग अनेक हैं. ये सारे रंग चमकते रहें-दमकते रहें-और हम इसी तरह मौज-मस्ती मनाते रहें. लेकिन हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि कोई कारण ऎसा उत्पन्न न हो जाये जिससे यह बदरंग हो जाए. याद रखें--इस सांस्कृतिक त्योहार की गरिमा जीवन की गरिमा में है. होली के इस अवसर पर इस् तरह गुनगुना उठें

लाल-लाल टॆसू फ़ूल रहे फ़ागुन संग
होली के रंग-रंगे, छ्टा-छिटकाए हैं.
वहाँ मधुकाज आए बैठे मधुकर पुंज
मलय पवन उपवन वन छाए हैं .
हँसी-ठिटौली करैं बूढे औ बारे सब
देख-देखि इन्हैं कवित्त बनि आयो है.

भारतीय महिलाएँ एवं आरण्य संस्कृति

पॆट की आग बुझाने के लिए अनाज चाहिएछानना पडता -अनाज को खाने योग्य बनाने के लिए उसे कूटना , है और फ़िर रोटियां बनाने के लिएआटा तैयार करना होता हैउसे पकाने के लिए ईंधन ,इतना सब होने के बाद . इस तरह पेट में धधक रही आग को .चाहिए और ईंधन जंगलों से प्राप्त करना होता हैशांत किया जा सकता है.

तरह के जरुरतें उठ खडी-जब पेट भर चुका होता है तो फ़िर आदमी के सामने तरह .बात यहाँ नहीं रुकती होने लगती हैंलकडियाँ जंगल से प्राप्त होती .जिसमें लकडियाँ लगती है, अब उसे रहने के लिए एक छत चाहिए . इनके बनाने के ,कुर्सियाँ और अलमारियाँ चाहिए-लिए पलंग सोने अथवा अपना सामान रखने के-फ़िर उसे बैठेने .है लकडियाँ केवल जंगल से ही प्राप्त होती .लिए लकडियाँ चाहिए है .द्रुत गति से भागने के लिए वाहन चाहिए . अब .गाडियां बनाने के किए कारखाने चाहिए और कारखाने को खडा करने के लिए सैकडों एकड जगह चाहिए उसने धरती के गर्भ में कुएं खोद डाले .गाडियों कि पेट्रोल चाहिए .कारखाने चलाने के लिए बिजली चाहिएऔर . बिजली के उत्पादन केलिए कोयला और पानीअब वह धरती पर कुदाल चलाता है और धरती के गर्भ में छिपी . अब गाडियों को दौडने .कारखाना सैकडों की तादात में गाडियों का उत्पाद करता है .संपदा का दोहन करने लगता है सडकों का जाल बिछाया जाने लगता है और देखते ही देखते कई पहाडियां जमी .के जगह चाहिएदोज हो जाती है ,. जंगल साफ़ हो जाते हैं बस्तियां उजाड दी जाती हैआज स्थिति यह बन पडी है कि आम आदमी को सडक पर , .चलने को जगह नहीं बची

अब आसमान छूती इमारतें बनने लगी हैं इनके निर्माण में एक बडा भूभाग लगता हैकल .-कारखानों और अन्य बिजली के उपकरणों को चलाने के लिए बिजली चाहिए नयी बसाहट कोइन सबकी .पीने को पानी चाहिए. बांध के कारण आसपास .सैकडों एकड जमीन बांध में चली गई .जगह बांध बनाए जाने लगे-आपूर्ति के लिए जगह अब .आदमी की भूख यहां भी नहीं रुकती है .जिसमें कुछ भी उगाया नहीं जा सकता ,की जगह दलदली हो जाती है हिमालय जैसा संवेदनशील इलाका भी विकास के नाम पर बलि चढाने को तैयार किया जा रहा हैकरीब दो सौ . बडे बांध बनाए जा रहे हैं -बडे .में पडी है योजनाएं बन चुकी है और करीब छः सौ फ़ाईलों में दस्तखत के इन्तजार उत्तराखण्ड में आयी भीषण त .और नदियों का वास्तविक बहाव बदला जा रहा है्रासदी ,और भी अन्य त्रासदियाँ, .आदमी की विकासगाथा की कहानी कह रही है

जब पेड नहीं होंगे तो .आने वाले समय में सब कुछ विकास के नाम पर चढ चुका होगा फ़ेफ़डों में घुसने वाली जहरीली हवा का ?कार्बनडाइआक्साईड और अन्य जहरीले गैसों का जमावडा हो जाएगा दरवाजा कौन बंद करेगाभारत के पुरुषों ने भले ही इस ? बादलों से बरसने के लिए किसके भरोसे मनुहार करोगे ? .सत्य को पहचाना है-लेकिन भारतीय महिलाओं ने इसके मर्म को ,आवाज को अनसुना कर दिया हो

महिला .वर्तमान भी इसका साक्षी है .इतिहास को किसी कटघरे में खडा करने की आवश्यक्ता नहीं हैएँ आज भी वृक्षों की पूजा कर रही हैंवटवृक्ष के सात चक्कर लगाती है और उसे भाई मानकर उसके तनों में मौली . समृद्धि के लिए प्रार्थनाएँ करती -के लिए मंगलकामनाओं और सुख बांधती हैं और अपने परिवार के लिए और बच्चों धोकर लोटा भर जल च-तुलसी के पौधे में रोज सुबह नहा .हैढाती हैंऔर रोज शाम को उसके पौधे के नीचे दीप . पीपल के वृक्ष .उनका विवाह रचाती है .तुलसी के वृक्ष में वह वृंदा और श्रीकृष्ण को पाती हैं .बारना नहीं भूलती है - में जल चढानाउसके चक्कर लगाना और दीपक रखना नहीं भूलतींअमुआ की डाल पर झुला बांधकर कजरी गाती . और अपने भाई से सुरक्षा और नेह मांगती है .<u>अनेकों कष्ट सहकर बच्चों का पालनकष्ट सहना ,पोषण करना-, उसकी मर्यादा है.और संवेदनशीलता उसका मौलिक गुण .</u> यदि धोके से कोई एक छोटा सा कीडामकोडा उसके पैरों / तले आ जाए, तो वह असहज हो उठती है और यह कष्टउसे अन्दर तक हिलाकार रख द ,ेता हैजो ममता की .

वह भला क्योंकर जीवित वृक्ष ,वात्सल्य का सागर लहलहाता रहता हो-ममता-जिसके हृदय में दया ,साक्षात मूरत हो .? को काटने की सोचेगी

लम्बे सफ़ेद और विदेशी नस्ल के ,घने वृक्ष चाहिए,निर्माण के लिए मोटे, उद्दोगपतियों को कागज के यूक्लिप्टिस चाहिए औरअन्य उद्दोगों के लिए उम्दा किस्म के पेड चाहिए ,.तब वे लाचार -,परेशान-हैरान-गरीब तबके को स्त्रीपुरुषों को ज्यादा मजदूरी के एवज में घेरते हैं और वृक्ष काटने जैसा जघन्य अपराध करने के लिए -.मजबूर करते है<u>मजबूरी का जब मजदूरी के साथ संयोग होता है तो गाज पेडों पर</u> <u>गिरना लाजमी है</u>-इनकी मिली .इस प्रवृत्ति के चलते न जाने कितने ही .भगत का नतीजा है कि कितने ही वृक्ष रात के अन्धेरे में बलि चढ जाते हैं - जिनका एक ही मकसद होता है,गिरोह पैदा हो गए हैंपॆड काटना और पैसा बनानाअब तो ये गिरोह अपने साथ .धारदार हथियार के साथ पिस्तौल जैसे हथियार भी रखने लगे हैंसरकारी ,वन विभाग के अधिकारी और गस्ती दल .यदि कोई पकडा .केवल खानापूर्ति होती रहती है .इनका कुछ भी बिगाड नहीं सकते ,कानून में बंधे रहने के कारण उसकी गिरफ़तार होते ही जमानतदार .तो उसको कडी सजा दिए जाने का प्रावधान नहीं है ,भी गयातैयार खडा रहता हैदेखते ही देखते न जाने कितने पहाडों को अब तक .इस तरह वनमाफ़िया अपना साम्राज्य फ़ैलाता रहता है .जो वृक्ष ,तब होता है कि इस काम में महिलाएं भी बडॆ पैमाने में जुड चुकी हैं आश्चर्य तो .नंगा किया जा चुका है यह उनकी .पूजन को अपना धर्म मानती आयी हैं अपनी मजबूरी है-बेरोजगार है-जुआरी है-क्योंकि पति शराबी है, माँ की मजबूरी अब उस ममतामयी ,उनके पॆट में भूख कोहराम मचा रही है ,बच्चों की लाईन लगी है ,कामचोर है .हो जाती है और माफ़ियों से जा जुडती हैं

एक पहलू और भी है

तस्वीर का दूसरा एक पहलू और भी है और वह है त्यागपुरुष का पौरुष जहाँ .बलिदान और उत्सर्ग का ," वहीं नारी ,चुक जाता हैरणचंडी "बनकर खडी हो जाती है नारी के .से भरे पडे हैं ऎसे दृष्टान्तो ,इतिहास के पृष्ठ. जहाँ नारी अपने शिशु को अपने जीवन क .कुर्बानी के सामने प्रुरुष नतमस्तक होकर खडा रह जाता है अर्क पिलाकर उसे पालतीपन्ना .अगर जरुरत पडॆ तो अपने बच्चे को दीवार में चुनवाने में भी पीछे नहीं हटतीं ,पोसती है-धाई केउस बलिदानी उत्सर्ग को कैसे भुलाया जा सकता है ?.जब मर्द फ़िरंगियों की चमचागिरी में अल्मस्त होतो ए ,अथवा आततायियों के मांद में जा दुबका हो,क नारी झांसी की रानी के रुप में उसकी सत्ता को चुनौतियाँ देती हुई ललकारती हैं.और इन आततायियों के विरुद्ध शस्त्र उठा लेती है.

को महिलाओं ने धार्मिक अनुष्ठान की तरह माना है और अनेकानेक उदाहरण प्रस्तुत पर्यावरण की रक्षा " .किए हैंचिपको" आन्दोलन आखिर क्या है.? उसने पूंजींवादी व्यवस्थाशासनतंत्र और समाज के तथाकथित ,तो वे ,आता है जब कोई पेड काटने .वह अपने आपमें अनूठा है, टेकेदारों के सामने जो आदर्श प्रस्तुत किया है लेकिन इन्हें कटने,और उन्हें ललकाराते हुए कहती हैं कि पेड के साथ हम भी कट जाएंगी ,उनसे जा चिपकती है नहीं देंगीयह एक अहिंसक विरोध था और .करोडों पेडों की रक्षार्थ खडी हुई-लाल खून की यह कुर्बानी देश के लाखों ..ऎसी नारियों का नाम बडी श्रद्धा के साथ लिए जाते हैं .नतमस्तक होना पडा इन अहिंसा के सामने उन दुर्दांतों को दामी और चीमा ,अमृतादेवी ,गौरा ,वे हैं करमाआदिपेडों के खातिर अपना बालिदान देकर ये अमर हो गई .आदि-

और समूची मानवता को संदेश दे गई<u>कि जब पेड ही नहीं बचेगासंदेश की इस अमर .तो जीवन भी नहीं बचेगा , .गूंज आज भी सुनाई पडती है</u>

,स्त्री-पुरुष .विश्नोई समाज ने पर्यावरण के रक्षा का एक इतिहास ही रच डाला हैबालकबालिकाएं पेडों से - .विश्व में ऎसे उदाहरण बिरले ही मिलते हैं .जा चिपके और उनके साथ अपना जीवन भी होम करते रहे थे जोधपुर का तिलसणी गाँव आज भी अपनी गवाही देने को तैयार है कि यहाँ प्रकृति की रक्षा में विश्नोई समाज ने अपने प्राणों की आहूतियाँ दी थी श्रीमती .खींवनी खोखर और नेतू नीणा का बलिदान अकारण नहीं जा सकताशताब्दियां . .इन्हें और इनके बलिदान को सादर नमन करती रहेंगी

बात संवत के महाराजा के भव्य महल के निर्माण के लिए चूना पकाने के लिए जोधपुर .की है 1787 सब जानते थे कि केजडली का वनांचल वृ .लकडियाँ चाहिए थीक्षों से भरावहाँ के लोग पेडों को अपने जीवन .पूरा है- ही उपयोगी संबंधियों की तरह और अकाल पडने पर बहुत-दुख में सगे-ये पेड उनके सुख .का अभिन्न अंग मानते है .भांति परिचित थे कि वे पेडों कॊ किसी भी कीमत पर कटने नहीं देंगे-लोग इस बात से भी भली .सिद्ध होते रहे हैं उन्हें दलबल के साथ आता देख ग्रामीणों .जो कुल्हाडियों से लैस थी ,महाराजा ने कारिन्दों की एक बडी फ़ौज भेजी की हाथ जोडॆ और कहा ,विनय आदि किए-ने अनुनय<u>ये पेड हमारे राजस्थान के कल्पवृक्ष हैं.</u> ये पेड धरती के वरदान स्वरुप हैंआप चाहें हमारे प्राण लेलें लेकिन हम . पेडों को काटने नहीं देंगेइस अहिंसात्मक टॊली की . .थीं .अगुआयी अमृता देवी ने की

अमृतादेवी

पेड से चिपकी अमृतादेवी

वे सामने आयीं और एक पेड से जा चिपकी और गर्जना करते हुए कहा<u>“-चलाओ अपनी कुल्हाडी मैं भले....ही कट जाऊँ लेकिन इन्हें कटने नहीं दूंगी”.</u> उसकी आवाज सुनीअनसुनी कर दी गई और एक कारिन्दे ने आगे बढकर - अपनी माँ को मृत पाकर इनकी तीन बेटियाँ वृक्ष से .उसके ऊपर कुल्हाडी का निर्मम प्रहार करना शुरु कर दिया कुल्हाडी के वार उनके शरीर पर पडते ज .कारिन्दे ने निर्मम प्रहार करने में देर नहीं लगाई .आकर लिपट गईंा रहे थे और उनके मुख से केवल एक ही बोल फ़ूट रहे थे“-:<u>सिर साठे सट्टे रुंख रहे तो भी सस्तो जाण.”</u> इनके बलिदान ने ग्रामीणों के मन में एक अभूतपूर्व जोश और उत्साह को बढा दिया थाबारी से ग्रामीण पेडों से -इसके बाद बारी . जा चिपकता और कारिन्दे उन्हें अपनी कुल्हाडी का निशाना बनाते जाताहँसते -व्यक्तियों ने हँसते 363 इस तरह . .अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया

हम जब इतिहास की बात कर ही रहे हैं तो और थोडा पीछे की ओर चलते हैंऔर उस पौराणिक युग की यात्रा .
.जब प्रकृति और मनुष्य के जीवन के बीच कैसे संबंध थे, करते हैं

मत्स्यपुराण में वृक्ष लगाने कि विधि बतलायी गई है.

“पादानां विधिं सूत ये चे लोकाः//केन कर्तव्यं पादपोद्दापनं बुधै विधिना//यथावद विस्तराद वद//
स्मृतास्तेषां तानिदानीं वदस्व नः

ऋषियों ने सूतजी से पूछाअब आप हमें विस्तार के साथ वृक्ष लगाने की यथा' -;र्थ विधि बतलाइये .
लोकों की प्राप्ति बतलायी विद्वानों को किस विधि से वृक्ष लगाने चाहिए तथा वृक्षारोपण करने वालों के लिए जिन .”उन्हें भी आप इस समय हम लोगों को बतलाइए ,गयी है

सूतजी ने वृक्ष लगाए जाने के की विधि के बारे में विस्तार से वर्णण किया हैवर्त .मान समय में शायद ही इस विधि से कोई वृक्ष लगा पाता हैपहले ही इसकी व्यवस्था करा ,वृक्ष लगाने वाले अतिविशिष्ठ व्यक्ति के लिए . उनके आने का इन्तजार किया जाता है और उसके आते ही उसे फ़ूलमालाओं से लाद दिया जाता है .दी जाती है और वृक्ष लगाते समय उन महाशय की फ़ोटॊ उतारकर अखबार में प्रकाशित करा दी जाती हैउसके बाद उस वृक्ष . कोशिश तो यह होनी चाहिए कि .नतीजन वृक्ष सूख जाता है .पाता है पानी डालने शायद ही कोई जा ,की जडॊं में यदि ऎसा होता तो अब तक उस क्षेत्र विशेष में .और लोगो को शीतल छाया और फ़ल दे सके ,बढे-वृक्ष पले हरियाला का साम्राज्य छाया होता और न जाने कितने फ़ायदे वहां के रहवासियों को मिलतेसूतजी ने वृक्ष .खैर . .किस चीज की प्राप्ति होती है बतलाया है-लगाए जाने पर किस

“अनेन विधिना यस्तु कुर्याद वृक्षोत्सवंसर्वान कामानवाप्नोति फ़लं चानन्त्यमुश्नुते /
यश्चैकमपि राजेन्द्र वृक्षं संस्थापयेन्नरःसो/Sपि स्वर्गे वसेद राजन यावदिन्द्रायुतत्रयम
भूतान भव्यांश्च मनुजांस्तारयेदद्रुमसम्मितानपरमां सिद्धिमाप्नोति पुनरावृत्तिदुर्लभाम/
य इदं श्रृणुयान्नित्यं श्रावयेद वापि मानवःसो/Sपि सम्पूजितो देवैब्रह्मलोके महीपते)16-17-18-19)

अर्थात -:<u>जो विद्वान उपर्युक्त विधि से वृक्षारोपण का उत्सव करता है .उसकी सारी कामनाएँ पूर्ण होती है , तब , वह जब तक तीस इन्द्र समाप्त हो जाते हैं ,जो मनुष्य इस प्रकार एक भी वृक्ष की स्थापना करता है ! राजेन्द्र वह जितने वृक्षों .तक स्वर्ग में निवास करता है का रोपण करता हैअपने पहले और पीछॆ की उतनी ही पीढियों का , जो मनुष्य प्रतिदिन इस प्रसंग को .पुनरावृत्ति से रहित परम सिद्धि प्राप्त होती है उद्धार कर देता है तथा उसे)”.वह भी देवताओं द्वारा सम्मानित और ब्रह्मलोक में प्रतिष्ठित होता है .सुनता या सुनाता है</u>मत्स्यपुराणउनसठवाँ -(अध्याय

मत्स्यपुराण में वृक्षों का वर्णण बारस्कन्दादिपुराणॊं ,भविष्यपुराण ,इसके अलावा पद्मपुराण .बार मिलता है- .में इसकी विस्तार से विधियां बतलायी गईं है

“य़स्य भूमिः प्रमाSन्तरिक्षमुतोदरमदिव्यं यश्च बूर्धानं तस्मै ज्येष्ठाय/ ब्रहमणॆ नमः अथर्ववेद)
)१०(३२/७/

अर्थात "भूमि जिसकी पादस्थानीय़ और अन्तरिक्ष उदर के समान है तथा द्दुलोक जिसका मस्तक हैउन ,
".सबसे बडॆ ब्रह्म को नमस्कार है

यहाँ परमब्रह्म परमेश्वर को नमस्कार करप्रकृति के अनुसार चलने का निर ,्देश दिया गया हैवेदों के .
वहाँ .ऋग्वेद में प्रकृति का मनोहारी चित्रण हुआ है .अनुसार प्रकृति एवं पुरुष का सम्बन्ध एक दूसरे पर आधारित है
,पान हो-क्या खान ,सहन हो-किस ऋतु में कैसा रहन .शांति का आधार माना गया है-प्राकृतिक जीवन को ही सुख
इ -क्या सावधानियाँ होंन सबका सम्यक वर्णण है.

ऋग्वेद में (७/१०३/७)<u>वर्षा ऋतु को उत्सव</u> मानकर शस्यअपनी हार्दिक प्रसन्नता ,श्यामला प्रकृति के साथ-
.अभिव्यक्त की गयी है

वेदों के अनुसार पर्यावरण को अनेक वर्गों में बांटा जा सकता है,-वायु -यथा-.जल-,ध्वनि,-खाद्य और मिट्टी ,
पर्यावरणकी रक्षा में वायु की स्वछता स्वस्थ और सुखी जीवन के लिए .संरक्षण आदि-पक्षी-पशु ,वनसंपदा ,वनस्पति
ईश्वर ने प्राणिजगत के लिए संपूर्ण पृथ्वी .बिना प्राणवायु के एक क्षण भी जीना संभव नहीं है .का प्रथम स्थान है
ह .के चारों ओर वायु का सागर फ़ैला रखा हैमारे शरीर में रक्तबाहर की तरफ़ दवाब ,वाहिनियों में बहता हुआ खून-
.यदि इसे संतुलित नहीं किया गया तो शरीर की धमनियां फ़ट जाएगीं और हमारा जीवन नष्ट हो जाएगा ,डालता है
इसमें ,पौधे आक्सीजन देकर क्लोरोफ़िल की उपस्थिति में-पॆड .वायु का सागर इससे हमारी रक्षा करता हैसे
कार्बनडाईआक्साइड अपने लिए रख लेते हैं और हमें आक्सीजन देते हैंपौधे वायु की शुद्धि द्वारा -इस प्रकार पेड .
.रक्षा करते हैं-हमारी प्राण

वायु की शुद्धि के लिए यजुर्वेद में स्पष्ट किया है .

"तनूनपादसुरो विश्ववेदा देवो देवेषु देवः"पथो अनक्तु मध्वा घृतेन/ (१२/२७)

"**द्वाविमौ वातौ वात सिन्धोरा परावतःपरान्यो वातु यद्रपः दक्षं ते अन्य आ वायु/**

(२/१३७/१०-ऋग्वेद)

यददौ वात ते गृहेऽमृतस्य निधिर्हितः(३/१८६/१०-ऋग्वेद) **ततो नो देहि जीवसे/**

हमारे पूर्वजों को यह ज्ञान था कि हवा कई प्रकार के गैसों का मिश्रण हैअलग गुण एवं -उनके अलग ,
शुद्ध ताजी हवा अमूल्य औषधी है और .हमारे जीवन के लिए आवश्यक है जो ,इसमें प्राणवायु भी है ,अवगुण हैं
.वह हमारी आयु को बढाती है

.आपस में वार्ता करते समय धीमा एवं मधुर बोलें ,वेदों में यह भी कहा गया है कि तीखी ध्वनि से बचें

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा/३ अथर्ववेद)**वदत भद्रया सम्यश्च सव्रता भूत्वा वाचं/**३० .(३/**जिव्हाया अग्र मधु मे जिव्हामूले मधूलकम**/अथर्वेवेद१)**ममेदह क्रतावसो मम चित्तमुपायसि/**३४(२/

अर्थात -;मेरी जीभ से मधुर शब्द निकलेंकीर्तन करते स-पूजन-भगवान का भजन .मय मूल में मधुरता होमधुरता .
.प्रदूषण से बचाव के उपाय एवं-इसी तरह खाद्य..मधुरता बनी रहे मेरे चित्त में .मेरे कर्म में निश्चय रहे
.एवं वनस्पतियों में प्रदूषण की रोकथाम के उपाय भी बतलाए गए हैं (पृथ्वी)मिट्टी

यस्यामन्नं व्रीहियवौ यस्या इमाः पंच कृष्टयःभूम्यै/ पर्जन्यपल्यै नोमोऽतु वर्षमेदसे(४२/१/१२-अथर्ववेद).

अर्थात -;भोजन और स्वास्थय देने वाली सभी वनस्पतियाँ इस भूमि पर उत्पन्न होती हैपृथ्वि सभी वनस्पतियों की .
.क्योंकि वर्षा के रुप में पानी बहाकर यह पृथ्वी में गर्भाधान करता है,माता और मेघ पिता हैं

सभी में प्रकृति का यशोगान मिलेगा और यह भी मिलेगा कि ,आप किसी भी ग्रंथ को उठाकर देख लीजिए .आपके और उसके बीच कैसे संबंध होंने चाहिए और किस तरह से हमें उसे स्वस्थ और स्वच्छ बनाए रखना है शायद हम भूलते जा रहे हैं कि<u>पर्यावरण चेतना हमारी संस्कृति का एक अटूट हिस्सा रहा है.</u> हमने हमेशा से ही उसे मातृभाव से देखा हैअपने जीवन ,जो मां अपने बच्चे को .जीवन देने वाली माता के रुप में और-दुलार-प्यार . ,यदि हम उसके साथ दुर्व्यवहार करेंगे .उसे उस दूध की कीमत जानना चाहिए ,का अर्क निकालकर पिलाती हो उसका अपमान करेंगे अथवा उसकीउपेक्षा करेंगेतो निश्चित ही उसके मन में हमारे प्रति ममत्व का भाव स्वतः ही , लेकिन .माँ कभी भी अपने बच्चों पर कुपित नहीं होती, काफ़ी गलतियाँ करने के बावजूद .तिरोहित होता जाएगा - जब अति हो जाएमर्यादा टूट जाए तो फ़िर उसके क्रोध को झेलना कठिन हो जाता हैअपनी मर .ियादा की रक्षा के लिए फ़िर उसे अपने बच्चों की बलि लेने में भी.कोई झिझक नहीं होती ,

....

मत्स्य पुराण के अनुसार <u>भारत के भूभाग से निकलने वाली नदियों का वर्णन</u>

सृष्टी के आरंभ में ब्रह्माजी ने केवल एक पुराण की रचना की थी, जिसमें एक अरब श्लोक थे. अपनी विशालता के चलते इसे पढ़ने में कठिनाइयां होती थी. अतः इस पुराण को सरल तरीके से समझाने के लिए महर्षि वेदव्यास ने इस विशाल पुराण को १८ पुराणों में विभक्त करते हुए इसे आसान बना दिया.

अठारह पुराणों के नाम तथा उनमें लिखे गए श्लोकों की संख्या निम्नानुसार हैं.

(१)**ब्रह्मपुराण**- दस हजार (२) **पद्म पुराण**-५५ हजार (३) **विष्णु पुराण**-२३ हजार (४) **शिव पुराण**-२४ हजार (५) **भागवत पुराण**-१८ हजार (६) **नारद पुराण**-२५ हजार (७) **मार्कण्डेउ पुराण**- ९ हजार (८) **अग्नि पुराण**- १५ हजार चार सौ (९) **भविष्य पुराण**- १४ हजार पांच सौ (१०) **ब्रह्मवैवर्त पुराण**- १८ हजार (११)**लिंग पुराण**-११ हजार (१२) **वराह पुराण**-२४ हजार (१३) **स्कंद पुराण**-८१ हजार एक सौ (१४)**वामन पुराण**-१० हजार(१५) **कुर्म पुराण**-१७ हजार (१६) **मत्स्य पुराण**- १४ हजार (१७) **गरुड़ पुराण**-१९ हजार (१८) **ब्रह्माण्ड पुराण**-१२ हजार.

इस तरह मत्स्य पुराण सोलहवां पुराण है जिसमें २९० अध्याय तथा १४ हजार श्लोक हैं. इस ग्रंथ में मत्स्य अवतार की कथा के अलावा तालाब, बागीचा, कुआं, बावड़ी, पुष्करिणी, देव मन्दिर की प्रतिष्ठा, वृक्ष लगाने की विधि, भूगोल का विस्तृत वर्णन, ऎरावती नदी का वर्णन, हिमालय की अद्भुत छटा का वर्णन, कैलाश पर्वत का वर्णन, गंगा जी की सात धाराओं के वर्णन के साथ ही राजा पुरुरवा की रोचक कथा भी शामिल है..

पुराण शब्द “पुरा” एवं “अण” शब्दों की संधि से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है-पुराना अथवा प्राचीन, अनागत वा अतीत. “ अण” शब्द का अर्थ होता है- कहना या बतलाना अर्थात जो पुरातन है अथवा अतीत के तथ्यों, सिद्धांतों, शिक्षाओं, नीतियों, नियमों और घटनाऒं का विवरण प्रस्तुत करना. माना जाता है कि सृष्टि के रचियता ब्रह्माजी ने सर्वप्रथम जिस प्राचीनतक धर्मग्रंथ की रचना की, उसे पुराण के नाम से जाना जात है. हिन्दू सनातन धर्म में, पुराण सृश्टि के प्रारम्भ से माने गए हैं, इसलिए इन्हें सृष्टि का प्राचीनतक ग्रंथ मान लिया, किंतु ये बहुत बाद की रचना है. सूर्य के प्रकाश की भांति पुराण को ज्ञान का स्त्रोत माना जाता है, जैसे सूर्य अपनी कितणों से अंधकार हटा कर उजाला कर देता है, उसी प्रकार पुराण अपनी ज्ञानरुपी किरणों से मानव के मन का अंधकार दूर करके सत्य के प्रकाश का ज्ञान देते है. सनातनकाल से ही जगत पुराण की शिक्षाओं और नीतियों पर आधारित है.

विषयवस्तु- प्राचीन काल से पुराण देवताओं, ऋषियों, मनुष्यों-सभी का मार्गदर्शन करते रहे हैं. पुराण मनुष्य को धर्म नीति के अनुसार जीवन व्यतीत करने की शिक्षा देते हैं. पुराण मनुष्य के कर्मों का विश्लेषण कर दुष्कर्म करने से रोकते हैं. पुराण वस्तुतः वेदों का विस्तार हैं, वेद बहुत ही जटिल तथा शुष्क भाषा शैली में लिखे गए हैं. वेदव्यास जी ने पुराणों की रचना और पुनर्रचना की. कहा जाता है “पूर्णात पुराण” जिसका अर्थ है, जो वेदों का पूरक हो अर्थात वेदों की जटिल भाषा में कही गई बातों को सरल भाषा में समझाया गया है. पुराण-साहित्य में अवतारवाद को प्रतिष्ठित किया गया है. निर्गुण-निराकार की सत्ता को मानते हुए सगुण साकार की उपासना करना इन ग्रंथों का विषय है. पुराणों में अलग-अलग देवी देवताअओं को केन्द्र में रखकर पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म और कर्म-अकर्म की कहानियां हैं. प्रेम, त्याग, भक्ति, सेवा, सहनशीलता ऎसे मानवीय गुण हैं, जिनके अभाव में उन्नत समाज की कल्पना नहीं की जा सकती. पुराणों में देवी-देवताओं के अनेक स्वरुपों को लेकर एक विस्तृत विवरण मिलाता है. पुराणकारों ने देवताओं की दुष्प्रवृत्तियों का व्यापक विवरण दिया है लेकिन मूल उद्देश्य सदभावना का विकास और सत्य की प्रतिष्ठा ही है.

पुराणॊ की रचना वैदिक काल के काफ़ी बाद की है. इनमें सृष्टि के आरम्भ से अन्त तक का विषद विवरण दिया गया है. इन्हें मनुष्य के भूत, भविष्य और वर्तमान का दर्पण भी कहा जा सकता है. सरलतम शब्दों में कहा जा सकता है कि भूत में जो हुआ, वर्तमान में जो कुछ हो रहा है और भविष्य में क्या कुछ होने वाला है---इसका दिग्दर्शन कराना ही पुराणों का मकसद रहा है. यदि मनुष्य अपने अतीत में झांककर देखे तो वह अपने सुखद वर्तमान का निर्माण आसानी से कर सकता है. इनमें देवी-देवताओं का और पौराणिक मिथकों का बहुत रोचक तरीके से वर्णन दिया गया है.

भागवत पुराण और शिव पुराण को विस्तार से सुनने का मौका मुझे मिला है. बाकी के पुराणॊं के बारे में केवल जानकारियां भर है. गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित "मत्स्य पुराण" घर में किसी अनुपयोगी वस्तु की तरह पड़ा हुआ था. अकस्मात उसके पन्ने पलटने का मौका मिला. ११४ वें अध्याय में नदियों के उद्‍गमस्थलों की, नदियों के आसपास में बसे जनपदों के बारे में बतलाया गया है. इनमें से अनेक नाम ऎसे हैं,जिन्हें बारे में न कभी सुनने का और न जानने का मौका मिला. ये नाम सर्वथा नए हैं. जिनके बारे में विस्तार से खोजबीन की जानी चाहिए कि वे आज भी उस स्थान पर बने हुए हैं या उनके नाम बदल दिया गए है. कुछ देशों के नामों का उल्लेख भी इसमें आया हुआ है (जो आज स्वतंत्र रुप से अपना कार्य कर रहे हैं) को पढ़कर लगता है कि प्राचीन समय में वे भारत का ही हिस्सा रहे हों? अध्याय ११४ के कुछ श्लोकों और उनके अर्थों को मैंने लिपिबद्ध करते हुए यहाँ प्रस्तुत किया है, जिसे पढ़कर आपको भारत के भूभागों और नदियों के बारे में पढ़ने को मिलेगा.

अध्याय–११४ (मतस्यपुराण से उद्दत)

सप्त चास्मिन महावर्षे विश्रुताः कुलपर्वताः * मेहेन्द्रो मलयः सह्यः शुक्तिमानृक्षवानपि
विन्ध्यश्च पारियात्रश्च इत्येते कुलपर्वताः * तेषां सहस्त्रशश्चान्ये पर्वतास्तु समीपतः
आभिशातास्ततश्चान्ये विपुलाश्चित्रसानवः * अन्ये तेभ्यः परिशाता ह्र्स्वा ह्रस्योपजीविनः
तैर्विमिश्रा जानपदा आर्या मलेच्छाश्च सर्वतः* पीयन्ते यैरिमा नद्धो गंगा सिन्धुः सरस्वती
शतद्रुश्चन्द्रभागा च यमुना सरायूस्तथा * इरावती वितस्ता च विपासा देवेका कुहूः
गोमती धूतपापा च बाहुदा च दृषद्‍वती
कौशिकी च तृतीया च निश्चीरा गण्डकी तथा* चाक्षुर्लौहिता इत्येता हिमवत्पादनिःसृताः
वेदस्मृतिर्वेत्रवती वृत्रघ्नी सिन्धुरेव च * पर्णाशा चन्दना चैव सदानीरा मही तथा
पारा चर्मण्वती यूपा विदिशा वेणुमत्यपि * शिप्रा ह्यवन्ती कुन्ती च पारियात्राश्रिताः स्मृताः(१७-२४)

इस महान भारतवर्ष में सात विश्वविख्यात कुलपर्वत हैं- महेन्द्र (उडीसा के दक्षिणपूर्वी भाग का पर्वत) मलय सह्य, शुक्तिमान (यह शक्ति पर्वत है, जो रायगढ़ से लेकर मानभूम जिले की डालमा पहाड़ी तक फ़ैला है) ऋक्षवान (यह विन्ध्य-पर्वतमाला का पूर्वी भाग है) विन्ध्य, और पारियात्र (यह विन्ध्यपर्वतमाला का पश्चिमी भाग है)- ये कुलपर्वत हैं. इनके समीप अन्य हजारों पर्वत हैं. इनके अतिरिक्त अन्य भी विशाल एवं चित्र-विचित्र शिखरों वाले पर्वत हैं तथा दूसरे कुछ उनसे भी छॊटॆ हैं, जो निम्न (पर्वतीय) जातियों के आश्रयभूत हैं. इन्हीं पर्वतों से

संयुक्त जो प्रदेश हैं, उनमें चारो ओर आर्य एवं मलेच्छ जातियां निवास करती हैं, जो इन आगे कही जाने वाली नदियों का जल पान करती हैं. जैसे गंगा, सिन्धु, सरस्वती, शतद्रु (सतलज), चन्द्रभागा (चिनाव) यमुना, सरयू, इरावती (रावी), वितस्ता (झेलम), विपाशा (व्यास), देविका, कुहू, गोमती, घूतपापा (धोपाप) बाहुदा, दृष्यद्वती, कौशिकी (कोसी), तृतीया, निश्चीरा, गण्डकी, चक्षु, लौहित- ये सभी नदियां हिमालय की उपत्यका (तलहटी) से निकली हुई हं. वेदस्मृति, वेत्रवती (बेतवा), वृत्रघ्नी, सिन्धु, पर्णासा, चन्दना, सदानीरा, मही, पारा, चर्मवती, यूपा, विदिशा, वेणुमती, क्षिप्रा, अवन्ती तथा कुन्ती- इन नदियों का उद्गमस्थल पारियात्र पर्वत है.(१७-२४)

शोनो महानदी चैव नर्मदा सुरसा क्रिया
मन्दाकिनी, दशार्णा च चित्रकूटा तथैव च * तमसा पिप्पली श्येनी करतोया पिशाचिका
विमला चंचला चैव वंजुलोआ वालुवाहिनी
शुक्तिमान्ती शुनी लज्जा मुकुटा ह्रदिकापि च * ऋक्षवन्तप्रसूतास्ता नध्योऽमलजलाः शुभाः
तापी पयोष्णी निर्विन्ध्या क्षिप्रा च निषधा नदी* वेणवा वैतराआआअणी चैव विश्वमाला कुमुद्वती
तोया चैव महागौरी दुर्गा चान्तःशिला तथा * विन्ध्यपादप्रसूतास्ता नद्दः पुण्याजलाः शुभाः
गोदावरी भीमरथी कृष्णवेणी च वंजुला
तुंगभद्रा सुप्रयोगा वाह्या कावेर्यथापि च * दक्षिणापथनद्दस्ताः सह्यपादाद विनिःसृता.
कृतमाला ताम्रपर्णी पुण्यजा चोत्पलावती * मलयान्निःसृता नद्दः सर्वा शीतजलाः शुभाः
त्रिषामा ऋषिकुल्या च इक्षुला त्रिदिवाचला * लांगलिनी वंशधराः महेन्द्रतनयाः स्मृताः
ऋषीका सुकुमारी च मन्दगा मन्दवाहिनी * कृपा पलाशिनी चैव शुक्तिमत्प्रभवाः स्मृताः
सर्वाः पुण्यजलाः पुण्या सर्वाश्चैव समुद्रगाः * विश्वस्य मातरः सर्वा सर्वपापहराः शुभाः(२५-३३)

शोण, महानदी, नर्मदा, सुरसा, क्रिया, मन्दाकिनी, दशार्णा, चित्रकूटा, तमसा, पिप्पली, श्येनी, करतोया, पिशाचिका, विमला, चंचला, वालुवाहिनी, शुक्तिमन्ती, शुनी, लज्जा, मुकुटा और ह्रदिका- ये स्वच्छ सलिला कल्याणमयी नदियां ऋक्षवन्त (ऋक्षवान) पर्वत से उद्भूत हुई हैं. तापी, पयोष्णी (पूर्णा नदी या पैनगंगा), निर्विन्ध्या, क्षिप्रा, निषधा, वेण्या, वैतरणी, विश्वमाला, कुमुद्वती, तोया, महागौरी, दुर्गा तथा अन्तःशिला- ये सभी पुण्यतोया मंगलमयी नदियां विन्ध्याचल की उपत्यकाओं से निकली हुई हैं. गोदावरी, भीमरथी, कृष्णवेणी, वंजुला (मंजीरा), कर्नाटक की तुंगभद्रा, सुप्रयोगा, वाध्या (वर्धा नदी) और कावेरी- ये सभी नदियां दक्षिणापथ में प्रवाहित होने वाली नदियां हैं, जो सह्यपर्वत की शाखाओं से प्रकट हुई हैं. कृतमाला (वैगईन नदी) ताम्रपर्णी, पुष्पजा (पेन्नार नदी) और उत्पलावती- ये कल्याणमयी नदियां मलयाचल से निकली हुई हैं. इनका जल बहुत शीतल होता है. त्रिषामा, ऋषिकुल्या, इक्षुला, त्रिदिवा, अचला, लांगालिनी और वंशधारा - ये सभी नदियां महेन्द्र पर्वत से निकली हुई मानी जाती है. ऋषीका, सुकुमारी, मन्दगा, मन्दवाहिनी, कृपा और पलाशिनी- इन नदियों का उद्गम शुक्तिमान पर्वत से हुआ है. ये सभी पुण्यतोया नदियां पुण्यप्रद, सर्वत्र बहने वाली तथा साक्षात या परम्परा से समुद्रगामिनी हैं. ये सब-की-सब विश्व के लिए माता-सदृश हैं तथा इन सबको कल्याणकारिणी एवं पापहारिणि माना गया है.(२५-३३)

सह्यास्यानन्तरे चैते गोदावरी नदी * पृथिव्यामपि कृत्स्नायां स्स प्रदेशो मनोरम, (३७)
यत्र गोवर्धनो नाम मन्दरो गन्धमादनः * रामप्रियार्थम स्वर्गीया वृक्षा दिव्यास्तथौषधी (३८)

इनकी सैकडों-हजारों छोटी-बड़ी सहायक नदियां भी हैं, जिनके कछारों में दुरु, पांचाल, शाल्व, सजागंल, शूरसेन, भद्रकार, बाह्य, सहपटच्चर, मत्स्य, किरात, कुन्ती, दुन्तल, काशी, कोसल, आवन्त, कालिंग, मूक और अन्धक-ये देश अवस्थित हैं, जो प्रायः मध्यदेश के जनपद कहलाते हैं. ये सह्यपर्वत के निकट बसे हुए हैं, यहां गोदावरी नदी प्रवाहित होती है. अखिल भूमंडल में यह प्रदेश अत्यन्त ही मनोरम है. तत्पश्चात गोवर्धन, मन्दराचल और श्रीरामचन्द्रजी का प्रियकारक गन्धमादन पर्वत है, जिस पर मुनिवर भरद्वाज जी ने श्रीरामजी के मनोरंजन के लिए स्वर्गीय वृक्षों और दिव्य औषधियों को अवतरित किया था. इन्हीं मुनिवर के प्रभाव से यह प्रदेश पुष्पों से परिपूर्ण होने के कारण मनोमुग्धकारी हो गया था. बाल्हीक (बलख), बाटधान, आभीर, कालतोयक, पुरन्ध्र, शूद्र, पल्लव, आत्तखण्डिक, गान्धार, यवन, सिन्धु (सिंध) सौवीर (सिंध का उत्तरी भाग), मद्रक (पंजाब का उत्तरी भाग), शक, दुह्य (ययाति-पुत्र द्रुक्यु का उत्तरी भाग--पश्चिमी पंजाब), पुलिन्द, पारद, आहारमूर्तिक, रामठ, कण्ठकार, कैकेय और दशनामक- ये क्षत्रियों के उपनिवेश हैं तथा इनमें वैश्य, शूद्र कुल के लोग निवास करते हैं. इनके अतिरिक्त कम्बोज (अफ़गानिस्तान), दरद(पाकिस्तान) बर्बर, अह्लव(ईरान), अत्रि, भरद्वाज, प्रस्थल, कसेरक, लम्पक, तलगान असुर जांगल सहित सैनिक प्रदेश- ये सभी उत्तरापथ के देश हैं. अब पूर्व दिशा के देश--- अंग(भागलपुर), वंग (बंगाल), मग्दुरक, अन्तर्गिरे, बहिर्गिरे, मातंग, यमक, मालवर्णक, सुह्य (उत्तरी असम), प्रविजय, मार्ग, वागेय, मालव, प्राग्ज्योतिष (आसाम का पूर्वी भाग), पुण्ड्र (बंगलादेश), विदेह(मिथिला), ताम्रलिप्तक (उड़ीसा का उत्तरी भाग), शाल्व, मागध और गोनर्द---ये पूर्व दिशा के जनपद हैं.

दक्षिणापथ के देश- पाण्ड्य, केरल, चोल, कुल्य, सेतुक, मूषिक, कुपथ, वाजिवासिक, महाराष्ट्र, माहिषक, कालिंग(उड़ीसा का दक्षिनी भाग), आभीर, सहैषीक, शबर, पुलिन्द, विन्ध्यमुलिक, वैदर्भ (विदर्भ), दण्डक, कुलीय, सिराल, अश्मक (महाराष्ट्र का दक्षिण भाग), भोगवर्धन (उड़ीसा का दक्षिण भाग), तैत्तिरिक, नासिक्य तथा नर्मदा के अन्तःप्राय में स्थित अन्य देश---- ये दक्षिणापथ के देश हैं. भारुकच्छ, माहेय, सारस्वत, काच्छीक, सौराष्ट्र, आनर्त और आर्बुद---ये प्रदेश अपरान्त प्रदेश हैं. अब जो विन्ध्यवासियों के प्रदेश हैं, वे इस प्रकार है---मालव, कुरूष, मेकल, उत्कव्ल, औंड्र (उड़ीसा), माष, दशार्ण, भोज, किषिकन्धक, तोशल, कोसल(दक्षिण कौसल), त्रैपुर, वैदिश(भेलसा राज्य), तुमुर, तुम्बर, नैषध, अरूप, शौण्डिकेर, वीतेहोत्र, तथा अवन्ति---ये सभी प्रदेश विन्ध्यपर्वत की वादियों में स्थित बतलाए जाते हैं.

ब्रह्माण्ड को बने हुए १,९७,२९,४९,११० वर्ष बीत चुके हैं. तथा जीवन की शुरुआत हुए १,९६,०८,५३,११० वर्ष बीत चुके हैं. यह ७ वें मन्वन्तर का २८ वां कलयुग चल रहा है. इसकी शुरुआत महाभारत के समय श्रीकृष्णजी के देवगमन के बाद हुई है. इस घटना को लगभग ५५०० वर्ष बीत चुके हैं. कलयुग का समय ४,३२,००० वर्ष होता है और द्वापर के लिए कलयुग से दुगना, त्रेता के लिए तिगुना तथा सतयुग के लिए कलयुग की सीमावधि का चार गुना होता है. जैसा की आलेख के शुरुआत में ही इस्स बात को स्पष्ट कर दिया गया है कि “पुराण” की रचना सृष्टि के प्रारंभ में स्वयं ब्रह्माजी ने की थी. चुंकि यह इतना विशद था कि इसे पढ़ पाना आसान नहीं था. वेदव्यासजी ने इसे आसान बनाते हुए अठारह पुराणों की रचना की. इन पुराणों में “मत्स्य पुराण” की गिनती सोलहवें नम्बर पर आती है. इससे स्पष्ट होता है कि लाखों साल पहले इसे लिख दिया गया था.

इतने अधिक पुराने पुराण में भूगोल की सटीक जानकारी किस तरह इकठ्ठी की गई होगी? किस तरह इतने बड़े भूभाग का भ्रमण किया गया होगा? इसको लेकर अनेकानेक प्रश्न मन-मस्तिस्क को मथने के लिए काफ़ी हैं. पहला सवाल तो यही उठ खड़ा होता है कि क्या उस समय इस ग्रंथ के रचियता के पास अत्यधिक विकसित साधन उपलब्ध थे, जिसकी सहायता से वे ऎसा कर पाए? क्या उस समय विज्ञान इतना उन्नत था कि उन्होंने इतने कम समय में १८ पुराणॊं का सम्पादन-लेखन किया, जबकि कोई प्रेस उन दिनों उपलब्ध नहीं थे जैसा की वर्तमान में हम देख रहे हैं? उपरोक्त आलेख में अनेकानेक नदियों के नाम, स्थानों के नाम आदि का इसमें उल्लेख किया गया है, कुछ स्थानों के नाम तो भारत भूमि के बाहर के भी आए हैं, क्या वे सबकी सब भारत के अन्तर्गत आते थे? कुछ ऎसे भी नाम आते हैं, जिनके बारे में काम ही सुनने में आता है,क्या वे आज भी इस भूभाग में अवस्थित हैं या फ़िर उनके नाम परिवर्तित कर दिए गए, इस पर भी गहनतम शोध की आवश्यकता है.

मंदाकिनी का सौंदर्य

महर्षि वाल्मिक श्रीरामजी के समकालीन थे .उन्होंने अपनी आँखों से जो देखा उसे जस का तस लिख दिया . उनके द्वारा रचित वह अद्‍भुत ग्रंथ**बाल्मिकरामायण-** के नाम से विख्यात हुआ. चुंकि उस समय के समस्त ऋषि-जंगलों में निवास करते थे-तपस्वी-मुनि. उनके आश्रमों में-महाराजाओं के पुत्र शिक्षा-उस समय के तत्कालीन राजा , .दीक्षा पाते थे

जब रामजी ,आलेख में उल्लेखित प्रंसग उस समय का है अपने वनवास काल में चित्रकूट में निवास कर रहे थे और भरतजी अपने प्राणसम भ्राता श्रीराम को वापिस लाने के प्रयोजन से अपनी माताऒंभाइयों तथा गुरु , उन्होंने मुनिश्री को अपने आगमन का प्रयोजन कह .वशिष्ट सहित भरद्वाज मुनि के आश्रम तक जा पहुँचे और तत्पश्चात उन्होंने परिवारसहित मु .सुनायानिश्री का आथित्य ग्रहण किया ,रात भर आश्रम में विश्राम करने के बाद . साथ ही चित्रकूट पहुँचने के लिए उपयुक्त मार्ग की जानकारी , सबेरा होने पर प्रस्थान करने के लिए आज्ञा मांगी .चाही

प्रस्तुत आलेख को दो भागों में विभक्त किया गया हैभ ,पहले भाग में भरद्वाज मुनि .रत को राम का पता बतलाते हुए चित्रकूट पर्वत तथा प्रवाहित होती मन्दाकिनी का और आसपास के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करते हैंतथा दूसरे भाग में उस स्थान में निवास कर रहे श्रीराम उसी प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन अपनी प्राणप्रिया सीता . बाल्मीक .को करा रहे होते हैं रामायण में प्रकाशित कुछ श्लोकों के माध्यम से उस प्राकृतिक सौंदर्य का रसास्वादन करते चलते हैं.

.महातेजस्वी भरद्वाज मुनि ने भाई के दर्शन की लालसा वाले भरत को इस प्रकार उत्तर दिया ,महातपस्वी

भाग१-

'भरतार्धतृतीयेषु योजनेष्वजने वने / चित्रकूटगिरिस्तत्र रम्यनिर्झरकाननः(१०)

भरत, यहाँ से ढाई योजन की दूरी पर एक निर्झर वन में चित्रकूट नामक पर्वत हैजहाँ के झरने और वन , भाई श्रीराम और लक्ष्मण निश्चय ही (कोस है २८ प्रयाग से चित्रकूट की आधुनिक दूरी लगभग) बडे ही रमणीय है .उसी में निवास करते हैं

"उत्तरं पार्श्वमासाद्द तस्य मन्दाकिनी नदी (११)पुष्पितद्रुमसंछन्ना रम्यपुष्पितकानना /
अनन्तरं तत्सरितश्चित्रकूटं च पर्वतम (१२)तयोः पर्णकुटीं तात तत्र तौ वसतो ध्रुवम /

जो फ़ूलों से लदे सघन वृक्षों से आच्छा ,उसके उत्तरी किनारे से मन्दाकिनी नदी बहती हैदित रहती हैउसके , .उस नदी के उस पार चित्रकूट पर्वत है .पास का वन बडा ही रमणीय़ और नाना प्रकार के पुष्पों से सुशोभित है-आस वे दोनो भाई श्रीराम और लक्ष्मण .वहाँ पहुँचकर तुम नदी और पर्वत के बीच में श्रीराम की पर्णकुटी देखोगे ! तात निश्चय ही उसी में निवास करतेहैं. गुरु वशिष्ठ भी श्री लक्षमणजी के साथ यात्रा कर रहे थे उन्होंने लक्ष्मण से कहा कि हम भरद्वाजजी के बतलाए हुए स्थान तक आ पहुंचे .

" अयं गिरिश्चित्रकूटस्तथा मन्दाकिनी नदी / एतत प्रकाशते दूरान्नीलमेघनिभं वनम(८)

जान पडता है कि यही चित्रकूट पर्वत है तथा मन्दाकिनी नदी बह रही हैपास का वन दूर से -यह पर्वत के आस . .नील मेघ के समान प्रकाशित हो रहा है

भाग२- श्रीराम का सीता के प्रति मन्दाकिनी नदी की शोभा का वर्णन

श्रीराम सीता का प्रिय करने की इच्छा से तथा अपने मन को बहलाने के लिए अपनी ,ठीक इसी समय भार्या को विचित्र चित्रकूट की शोभा का दर्शन करवा रहे थेचित्रकूट दिखलाने के बाद श्रीरामजी ने मिथिलेशकुमारी . .सीता को पुण्यसलिला रमणीय मन्दाकिनी नदी का दर्शन कराया

"विचित्रपुलिनां सम्यो संससारससेविताम(३)पश्य मन्दाकिनी नदीं.कुसुमैरुपसम्पन्नां/

प्रिये अ !ब मन्दामिनी नदी की शोभा देखों हंस और सारसों से सेवित होने के कारण यह कितनी सुन्दर जान पडती है.नाना प्रकार के पुष्प इसकी शोभा बढा रहे हैं .इसका किनारा बडा ही विचित्र है .

"नानाविधैस्तीररुहैर्वृतां पुष्पफ़लद्रुमैः(४)राज्न्ती राजराजस्य नलिनीमिव सर्वतः/

"फ़ल और फ़ूलों के भार से लदे हुए नाना प्रकार के तटवर्ती वृक्षों से घिरी यह मन्दाकिनी कुबेर के सौगन्धिक सरोवर की भांति सब ओर से सुशोभित हो रही है.

"मृगयूथनिपीतानि कलुषाम्भांसि साम्प्रतम(५).तीर्थानि रमणीयानि रतिं संजनयन्ति मे/

हरिनों के झुंड पानी पीकर इस समय यद्दपि यहाँ का जल गंदला कर गये हैं तथापि इसके रमणीय घाट मेरे मन को बडा आनन्द दे रहे हैं.

"जटाजिनधराः काले वल्कलोत्तरवाससः(६) ऋषय्स्त्ववगाहन्ते नदीं मन्दाकिनी प्रिये /

प्रिये मृगचर्म और वल्कल का उत्तरीय धारण करने वले महर्षि उपयुक्त समय में ,जटा ,वह देखो !आकर इस मन्दाकिनी नदी में स्नान कर रहे हैं.

"आदित्यमुपतिष्ठन्ते नयमादूध्र्वबाहवः(७)एते परे विशालाक्षि मनयः संशितव्रताः/

विशाललोचने नैत्यिक नियम के कारण दोनों भुजाएँ ऊपर ,जो कठोर व्रत का पालन करने वाले हैं ,ये दूसरे मुनि ! उठाकर सूर्यदेव का उपस्थान कर रहे हैं.

"मारुतोद्धूतशिखरैः प्रनृत्त एव पर्वतः(८) पादपैः पुष्पपत्राणि सृजभ्दिरभितो नदीम /

हवा के झोंके से जिनकी शाखाएँ झूम रही हैंअतएव जो मन्दाकिनी नदी के उभय तटों पर फ़ूल और पत्ते बिखेर रहे , .सा करने लगा है-उन वृक्षों से उपलक्षित हुआ यह पर्वत मानों नृत्य ,हैं

क्वचिन्मणिनिकाशोदां क्वचित सिद्धजनाकीर्णां पश्य मन्दाकिनी नदीम (९)

देखो कहीं ,कहीं तो इसमें मोतियों के समान स्वच्छ जल बहता दिखायी देता है ,मन्दाकिनी नदी की कैसी शोभा है ! यह ऊँचे कगारों से ही शोभा पाती है और कहीं सिद्धजन इसमें अवगाहन कर रहे हैं तथा यह उनमे व्याप्त दिखाई देती है.

निर्धूतान वायुना पश्य वितितान पुष्पसंचयाना(१०)पोप्लूयमानानपरान पश्य त्वं तनुमध्ये/

सूक्ष्म कटिप्रदेशवाली सुन्दरि ढेर फ़ूल किस तरह मन्दाकिनी के दोनों -के-वायु के द्वारा उडाकर लाये ये ढेर ,देखो ! तटों पर फ़ैले हुए हैं और वे दूसरेपुष्पसमूह कैसे पानी पर तैर रहे हैं.

"पश्यैतद्वल्गुवचसो रथांगाह्वयना द्विजाः(११)अधिरोहन्ति कल्याणि निष्कूजन्तः शुभा गिरः/

कल्याणि ये मीठी बोली बोलने वाले चक्रवाक पक्षी सुन्दर कलरव करते हुए किस तरह नदी के तटों ,देखो तो सही ! .पर आरुढ हो रहे हैं

"दर्शनं चित्राकूटस्य मन्दाकिन्याश्च शोभने(१२) अदहिकं पुरवासाच्च मन्य तव च दर्शनात /

शोभने वह अयोध्यानिवास की अपेक्षा भी अधिक ,यहाँ जो प्रतिदिन चित्रकूट और मन्दाकिनी का दर्शन होता है ! .सुखद जान पडता है

विधूतकल्मषैः सिद्धैस्तपोदमशमान्वितैः नित्यविक्षोभिजलां विगाहस्व/मया सह(१३)

इस नदी में प्रतिदिन तपस्या इन्द्रियसंयम और मनोनिग्रह से समपन्न निष्पाप सिद्ध महात्माओं के अवगाहन करने से इसका जल विक्षुब्ध होता रहता है.तुम भी मेरे साथ इसमें स्नान करो ,चलो .

सखीवच्च विगाहस्व सीते मन्दामिनी नदीमभा कमलान्यवमज्जन्ती पुष्कराणि च /मिनि(१४)

"भामिनि सीते उसी प्रकार तुम मन्दाकिनी नदी में उतरकर ,एक सखी दूसरी सखी के साथ जैसे क्रीडा करती है ! .क्रीडा करो-इसके लाल और श्वेत कमलों को जल में डुबोती हुई इसमें स्नान

त्वं पौरजनवद व्यालानयोध्यामिव पर्वतम(१५)मन्यस्व वनितेर नित्यं सरयूवदिमां नदीम /

प्रिये चित्रकूट पर्वत को अयोध्या के तुल्य मानो और ,तुम इस वन के निवासियों को पुरवासी के समान समझो ! .इस मन्दाकिनी नदी को सरयू के सदृश जानो

लक्ष्मणश्र्चैव धरमात्मा मन्निदेशे व्यवस्थितः(१६)त्वं चानुकूला वैदेहि प्रीतिं जनयती मम/

विदेहनन्दिनि लक धर्मात्मा !ृषमण सदा मेरी आज्ञा के अधीन रहते हैं और तुम भी मेरे मन के अनुकूल ही चलती हो.इससे मुझे बडी प्रसन्नता होती है ,

उपस्पृशंस्त्रिषवर्ण मधुमूलफ़लाशनः(१७)नायोध्यायै न राज्याअय स्पृहये च त्वया सह/

प्रिये हु मूल आहार करता-तुम्हारे साथ तीनों काल स्नान करके मधुर फ़ल !आ मैं न तो अयोध्या जाने की इच्छा रखता हूँ और न राज्य पाने की ही

इमां हि रम्यां गजयूथलोडितांसुपुष्पितां पुष्पभरैरलंकृतां न सो/निपीततोयां गजसिंहवानरै/Sस्ति यः स्यान्न "गतक्लमः सुखी

जिसे हाथियों के समूह मथे डालते है तथा सिंह और वानर जिसका जल पिया करते हैं ,जिसके तटपर सुन्दर पुष्पों से लदे वृक्ष शोभा पाते हैं तथा जो पुण्यसमूहों से अलंकृत हैऎसी इस रमणीय मन्दाकिनी नदी में स्नान करके जो , .ऎसा मनुष्य इस संसार में नहीं है-ग्लानिरहित और सुखी न हो जाय

"इतीव रामो बहुसंगतं वचः प्रियासहायः सरितं प्रति ब्रुवनचचार रम्/यं नयनांजनप्रभं स चित्रकूटं "रघुवंशवर्धनः

रघुवंश की वृद्धि करने वाले श्रीरामचन्द्रजी मन्दाकिनी नदी के प्रति ऎसी अनेक प्रकार की सुसंगत बातें कहते हुए नील.कान्तिवाले रमणीय चित्रकूट पर्वत पर अपनी प्रिया पत्नी सीता के साथ विचरने लगे-

....

मानव का मूल स्वभाव ही उत्सवधर्मी है.३

मानव की मूल प्रवृत्ति ही उत्सवधर्मी है .पाषाणयुग की बात करें, वह अपने समूह में आखेट के लिए निकलता था और किसी पशु को अपना शिकार बनाने के बाद उसके इर्द-गिर्द झूम-झम कर नाचता-गाता-खुशी मनाता था .फ़ुर्सद के समय में वह कन्दराओं में इसके चित्र भी उकेरता था. क्रमशः वह सभ्य होता गया .उसकी उत्सवधर्मिता परवान चढने लगी .उसने जाना कि छह ऋतुएं होती है .उसमे शरद ऋतु के आगमन के ठीक पहले वर्षा का अवसान हो रहा है .वर्षा ऋतु में जैसे ही पहली बौझार पडती है,पृथ्वी के अंग-अंग में नवजीवन लहलहा उठता है .धरती पर सब तरफ़ हरियाली का गलीचा बिछ जाता है .मोर के पावों में थिरकन आ जाती है .पपिहा पी..आ...पी..आ गाने लग जाता है .नदियां तरुणाई से भर उठती है ..बरसते पानी की रसधार में भींगते हुए उसने हल चलाते हुए गीत गाए .खेतों में लहलाती फ़सलें और अपने श्रमसाफ़ल्य को अनाज के रुप में फ़लता-फ़ूलता देख वह प्रसन्नता से भर उठता है और कटाई के बाद पूरा परिवार ढोलक की थाप पर नाच उठता है .इस तरह उसने अपने आप को ईश्वर की लीलाओं से पर्वों-त्योहारों को जोडते हुए अपनी उत्सवधर्मिता को नए-नए आयाम दिए . दस कोस पर पानी और बीस कोस पर वाणी के बावजूद भारतीय समाज ने सांस्कृतिकता को विशिष्ट स्थान दिलाया .लोक-अंचल में ही संस्कृति की असली विरासत सुरक्षित है .यद्दपि अधुनिकता ने काफ़ी हद तक सांस्कृतिकता को प्रभावित किया है ,इसके बाद भी हमारे लोक क्षेत्रों से जुडॆ लोग ,ग्रामीण समुदाय संस्कृति के सजक-प्रहरी के रुप में नजर आते हैं. संस्कृति का यह कार्य लोक-अंचल में आसानी से दृष्टिगत होता है .चाहे वह छत्तीसगढ हो,असम हो,या फ़िर त्रिपुरा,कुंमायू,पूर्वांचल,बुंदेलखंड आदि कोई भी हो,कोई भी राज्य हो ,सभी जगहों पर सांस्कृतिक विशिष्टता को संरक्षित करने के प्रयास किए जा रहे हैं.

बुंदेलखण्ड क्षेत्र हमेशा से ही लोक के प्रति सचेत रहा है.शौर्य गाथाओं,लोक-गाथाओं या फ़िर लोक-देवताओं के सहारे उसने अपनी संस्कृति को जीवित रखा है. पर्वों-त्योहारों,उत्सवों के साथ-साथ वैवाहिक कार्यक्रमों का उत्साह भी यहां देखने को मिलता है .यह एक ऎसा संस्कार है जहाँ अनेक प्रकार के रस्मों के साथ सम्पन्न किया जाता है . लडका-लडकी की बात पक्की हो जाने के बाद लगुन लिखाई, तिलक ,मगरमाटी ,मंडपाच्छादन ,देवपूजन ,तेलपूजन , चीकट, बारात निकासी ,द्वारचार ,पांव पखराई ,कुंवर कलेवा ,भांवर ,कन्यादान ,बिदाई ,,मुँह दिखाई,,आदि-आदि . अनेकानेक रस्मों के यह संस्कार पूरा होता है.

इन रस्मों को संपन्न करते समय घर की महिलाएं बन्ना-बन्नी के गीत गाती हैं .इनकी स्वर-लहरी सुनकर सभी लोग आनन्दित हो उठते हैं .हम यहाँ पर कुछ रस्मों पर गाए जाने वाले गीतों पर चर्चा करते चलें .यथा-

लगुन लिखाई जा चुकी है .मगरमाटी भी लाई जा चुकी है और लडकी जिसे अब बन्नी के रुप में जाना जाता है , हल्दी चढाई जा रही है .इस अवसर पर घर तथा पास-पडौस की महिलाएँ सामुहिक रुप से बन्नी कॊ आधार बनाकर गीत गाती हैं.जिसके बोल सीधे हृदय को पिघला देने वाले होते हैं. यथा-

बाबुल उडन चिरैया ,तुमने काहे पोसे
वो तो उड चली देस-बिदेस
अम्मा की कोयल उड चली
) २ (दिहरी बिरानी बाबुल बिटिया बिरानी
बिटिया की इक जनमी पाती रे

मोरे बाबुल बिटिया बिरानी

वधु के यहाँ लगुन-लिखाई होती है,जिसका विधिवत पूजन किया जाता है.पूजा के बाद लगुन के साथ नेग के रुप में कुछ रुपये भी रखे जाते हैं. फ़िर घर के कुछ सदस्य जिसमें वधू का भाई ,मुहल्ले-पडौस के कुछ युवातुर्कों के साथ लगुन वर के घर पहुंचाई जाती है.ब लगुन के वहां पहुंच जाने के बाद उसको किसी पंडित से पूजा करवाने के बाद पढा जाता है .इसके करने के पीछे उद्देश्य यह होता है कि वर-पक्ष को इस बात की जानकारी से अवगत करवाना होता है कि फ़ला दिन आपको बारात लेकर आना होगा .लगुन के आने पर स्त्रियां इस गीत को गाती हैं

लगुन आने पर

रघुननदन फ़ूले ना समाये,लगुन आई अरे...अरे
लगुन आई मोरे अंगना
रंग बरसत है ,रस बरसत है
मोरे बन्ना की लगुन चढत है
कानों में कुण्डल पहनो राजा बनडॆ
गले मुतियन की माल बिरसत है
मोरे बन्ना की लगुन चढत है
आज मोरे रामजू की लगुन चढत है.

वर पक्ष के यहाँ भी वे सारी रस्में संपन्न होती है ,जो वधु के यहाँ की जा रही होती है .इधर वर पक्ष में बन्ना को मण्ढे के नीचे खांब के पास बिठाया जाता है और फ़िर तेल चढावे की रस्म शुरु की जाती है .महिलाएं सामुहिक रुप से गाती हैं .यथा-

तेल मायना

आज मोरे बन्ना/बन्नी (को तेल चढत है
तो तेल चढत है फ़ुलेल चढत है
चढ गओ तेल फ़ूल की पाँखुरिया
जीजी चढावे तेल ,बन्ना की बाहुलिया
भौजी चढावे फ़ूल की पाँखुरिया
तेलन लाई तेल ,मालन लाई पाँखुरिया

)२ (चढ गओ तेल फ़ुलेल चंपो तेरी दोई कलिया
कौन बाई तेल चढावे,कौन राय की बेन्दुलिया
)बहन का नाम(बाई तेल चढाये
)भाई का नाम (राय की बेन्दुलिया

विवाह के अवसर पर गौरी-गणेश के आव्हान पूजन के पश्चात पितरों को एवं प्रकृति प्रदत्त भौतिक वस्तुओं का भी आव्हान किया जाता है .इस अवसर पर बन्ना या बन्नी की माता एवं चाची चककी पर गेहूँ पीसती जाती है एवं एक-एक पितरों का नाम लेती जाती है.साथ ही बन्ना या बन्नी नाम के साथ ही चक्की पर चांवल के दाने निमंत्रण स्वरुप फ़ेंकते जाते हैं .इस अवसर पर कुटुंब के सभी सदस्य उपस्थित रहते हैं .इस अवसर पर गाए जाने वाला गीत-यथा

"काज करो कजमन करो ,आज को नेवतो पाइयो
)पितर का नाम (बाबा नेवतियो"
आज को नेवतों पाइयो)एक-एक व्यक्ति के नाम का उच्चारण करते हुए इसे दोहराया जाता है(

)पितरों को नेवतने के बाद आग-पानी ,बदरा-पानी ,लठ्ठा-भोंगा ,हवा-आँधी सबको नेवतने के बाद बन्ना के हाथों से गोबर के द्वारा चक्की का मुँह बंद कर दिया जाता है ताकि मंगल कार्य में कोई विघ्न न आने पावे.

इस के बाद बारात निकासी होती है .सभी आमंत्रित सदस्यों-रिश्तेदारों तथा परिवार और कुटुंब के सन्मानित सदस्यों को साथ लेकर बारात घर से निकलती है .इस बीच कई प्रकार की रस्में होती है.

माँ अपने बेटे की नजर उतारती है .नारियल की गिरि तथा गुड से मुँह मीठा कराती है .अपना दूध पिलाकर बेटे से वचन लेना नहीं भूलती कि शादी के बाद उसकी अच्छे से देखरेख करेगा .इस अवसर पर महिलाएं गीत गाती हैं.यथा-

)दुल्हा की निकासी पर गाए जाने वाला गीत(

"मझोल -मझोल चलो जइयो रे हजारी दुल्हा
तुने को के भरोसे घर छोडॆ रे हजारी दुल्हा
मैंने मइया के भरोसे घर छोडों रे हजारी बन्ना
तेरी मैया को नइया पतियारो रे हजारी दुल्हा
तू तो ताला लगाये कुँजी ले जैयो रे हजारी दुल्हा"

)२ (बना के आँगन गेंदा फ़ूल ,कुसुम रंग फ़ीको पड गओ रे
बन्ना पापा)दादा-चाचा-मामा-फ़ूफ़ा ,भैया,जीजा(
सजे बरात ,सजन घर खलबल मच गई रे
सजन घर खलबल मच गई रे
बन्ना के आगे तबल निशान ,पतुरिया छम-छम नाचे रे
पतुरिया छम-छम नाचे रे
रुपइया खन-खन बाजे रे

)३(ऎसो सजीलो मेरो बन्ना रे ,शोभा सजी सीस चांदनी बनके
कोई तो नजर उतारो ,ऎसो सजीलो मेरो बन्ना रे
सीस बन्ना के सेहरा ,सोहे कलगी पे जाऊँ बलिहारी रे
दिल मे कब से था अरमान, बन्ना मेरा दूल्हा बने
चन्दन के मण्डवा रुच रुच के लाओ रे.....बन्ना मेरा

वधु के यहाँ बारात पहुँच चुकी है .बारात की अगवानी की जाती है .सजन-समधियों की भेंट होती है.इस अवसर भी गीत गाए जाते हैं.

ठाडे -ठाडे जनक जी के द्वार हो
रामचन्द्र दुल्हा बने
मंगल साज सजे अंगना में
कम्मर में सोहे कटार हो...रामचन्द्र.....
मुतियन चौक सुनयना पूरे
मन में हरष अपार हो.......रामचन्द्र......
बंदी बिरुदावली उच्चारे
हो रही जय जयकार ....रामचन्द्र.....
चन्दन पीढा विराजो राजा बनडे
पहरो नौ लख हार हो ...रामचन्द्र.....
महिलाएँ गारी गाती हैं इस अवसर पर
आए मोरे सजना,सुहानो लागे अंगना
सजना के लाने मैंने पुडिया पकाई
आवे री खावे सजना)समधी(
पीछे री खावे बलमा...आए मोरे सजना...

पाँव पखराई के समय का गीत

बिच गंगा बिच जमना,तीरथ बडे हैं प्रयाग
बिच बिच बैठे बाबुल उनके ,लेत कुमारन दान
दैयो रुप-रुपैया ,छिनरिया को खनकत जाये
दैयो उजरी सी गैया ,छिनरिया को खोवा खाये

चढाव चढाई के अवसर पर गीत

"सिया सुकुमारी को चढ रौव चढाव ,हरे मंडप के नीचे
बेटी मैके की बेंदी उतार धरो
ससुरे की बेंदी को कर लेव सिंगार ,हरे मंडप के नीचे
सिया सुकुमारी को चढ रओ चढाव ,हरे मंडप के नीचे"

चढाव के बाद भावरें पडती है. इसके बाद जेवनार होता है .जेवनार के अवसर पर गाए जाने वाला गारी गीत .इसमे समधी-समधन को ताना मारा जाता है.

"बन में बघनी बियानीसुनो भौंरा रे ,
ओको दूध दुहा लईसुनो भौंरा रे ,
समधी नेवत बुला लईसुनो भौंरा रे,
ओकी खीर बना लईसुनो भौंरा रे,
उनने आतर चाटे"ले ले दोना नाचे,पातर चाटे,

जेवनार के बाद दुल्हा०दुल्हन को लेहकोर के लिए लेकर जाते हैं .इस अवसर पर महिलाएं समधी को ताना मारते हुए गाती हैं क्योंकि समधी की ओर से पान-बताशे बंटवाने का रिवाज है.

"पानो की बिडिया कलेजे में लग गई

कलेजे में लग गई ,मेरे हियरे में लग गई
डलिया में तेरी समधन पान भी नइया
तो समधी को जियरा ठिकाने में नइया

बिदाई के अवसर पर गाए जाने वाला गीत. इस समय बिटिया को आशीष दिया जाता है

"जाओ ललि तुम फ़लियो फुलियो
सदा सुहागन रैयो मोरे लाल
सास ससुर की सेवा करिओ
पति आज्ञा में रहियो".

)बिदाई के बाद बेटी का अपने ससुराल आना ,वहाँ पर भी अनेकानेक रस्में करवाई जाती है(.

लोकगीतों की महत्ता लोकजीवन में हमेशा बनी रही है .विवाह संस्कार में गाए जाने वाले गीतों में एक प्रकार का संदेश भी सम्प्रेषित होते हैं .लोकगीतों द्वारा विवाह संस्कार की गरीमा बढ जाती है .लोकगीतों के मध्यम से हमारी लोक संस्कृति ,लोक परंपरा ,विरासत पल्लवित,पोषित और संरक्षित होती रहेगी .ऎसा विश्वास है.

फ़िल्मों में हिन्दी गीतों की बरसात

रिमझिम के तराने लेकर आई बरसात

प्रकृति की मनोरम छटा मानव को सदा अपने आगोश में लेने को तैयार रहती है. सच पूछॊ तो वह एक प्रकार से मनुहार सी करती रहती है. शायद ही कोई ऎसा अभागा मानव होगा जो प्रकृति के इस मनुहार का लुफ़्त न उठाना चाहे. सावन का महिना हो, झीनी-झीनी फ़ुहार और भीनी-भीनी पवन हो, धरती फ़ूलों का श्रृंगार किए बुला रही हो, कोयल प्रेम करने के संकेत धुन से न्योता दे रही हो और फ़िर भी पेड़ों पर झूले न डाले जावें या सखियाँ मिल-जुल कर हंसी मिचौली न करें या प्रियतम के साथ गुप-चुप प्यार की बातें न करें, यह भला कैसे हो सकता है?. हरियाली और सुन्दरता का मिलन तो आदिकाल से होता आया है. सावन की कजली तीज इसी मिलन का पावन अवसर है जब रूपवती नारियाँ हरियाली की गोद में झूले झूलती हुई गीत गाती हैं.

सावन मैना आइ तुलाना...घर-घर सखि हिंडोला ताना
कंत सुहागिन झूलै बारी.....गाए गीत उठत झनकारी
हरिभर भूमि कुंसुंभी रतनारि...नाइ सरीस्यऊं खेल धमारी
मधुर मौज घन गरज हीं झीनी परै पुहाउ..प्रेम हिंडोला झूल हीं गावैं मंगलाचार

अब ऎसे दृष्य कम ही देखने को मिलते हैं. जैसे-जैसे हम प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं, और आधुनिक बनने के चक्कर में अपनी अनमोल विरासतों को भूलते जा रहे है. धन्य है सिनेमा और धन्य हैं वे लोग जिन्होंने प्रकृति के सानिध्य में रहकर बेजोड़ गीत लिखे, धन्य हैं वे लोग जिन्होंने गीतों की कोमल भावनाओं को संगीत के माध्यम से जीवन्त कर दिया. जब भी कभी हम इन सदाबहार गीतों को सुनते हैं अथवा फ़िल्माए गए दृष्यों को देखते हैं, तो लगता है सावन आ गया है. सावन अब भी आता है.... बरसात अब भी आती है.... बादल आज भी गरजते हैं... बरसते हैं, लेकिन हमारे दिलों में वह उमंग नही जागती, जो कभी हमारे दिलों में हिलोरें पैदा कर देती थीं.... हलचलें मचा देती थीं.

आइए. फ़िल्मों के माध्यम से ही सही, हम बरसात में, अमृत की सी टपकतीं बूंदों में भींगने का प्रयास करें और बूंदों का जमकर त्योहार मनाएं. यहाँ हम केवल उन फ़िल्मों का, उन गीतकारों का, कलाकारों का, संगीतकारों का जिक्र करेंगे, जिन्होंने अपनी अद्‍भुत कल्पनाशक्ति से उन सबको अपने में आत्मसात करते हुए हमें अमरकृतियाँ दी हैं.. गीतों में "**बादल"** एक ऎसे सशक्त किरदार के रुप में सामने आता है जो प्रेमी-प्रेमिका को विरह में रुलाता है, मिलाता है, हंसाता है, नचाता है, गाने को., गुनगुनाने को विवश कर देता है, कभी आसक्ति जगाता है, इन्तजार करवाता है तो कभी एक दूत बनकर उपस्थित होता है. वह केवल प्रेमी-प्रेमिका के इर्द-गिर्द नहीं नाचता/बरसता बल्कि पारिवारिक संबंधो को सबल बनाने में भी एक सशक्त किरदार के रुप में उपस्थित होता है. उसके एक नहीं अपितु कई-कई रुप है, अतः कहा जा सकता है कि "बादल" नौ रसों को अपने में समेटे हुए हर किसी की जिन्दगी में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है.

हम केवल **बादलों** की बात करें और **आकाशवाणी** की बात न करें तो यह एक तरह से अन्याय ही होगा. आषाढ़मास से लेकर भाद्रपदमास में हरियाली तीज, नागपंचमी, रक्षाबंधन, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, हरतालिका, गणेशचतुर्थी, ऋषिपंचमी आदि पर्व एवं त्योहार मनाए जाते हैं. ये सभी पर्व एवं त्योहार, इन्हीं बदलो की उपस्थिति में संपन्न होते है. आकाशवाणी से जब गीत बजता है- "भैया मेरे राखी के बंधन को निभाना या बहना तुझे याद करे आदि-आदि, तो उन्हें सुनकर भाई-बहनों की आंखों से सावन बरसने लगता है.

ऎसे एक नहीं अनेकों गीत हैं जो बादलों की रिमझिम के साथ हमारे बीच आते हैं. आइए, हम उन गीतों के माध्यम से बरसात की रिमझिम में भीगने का प्रयास करते हैं. चुंकि बरसात को लेकर एक नहीं बल्कि अनेकों फ़िल्में बनाई गईं हैं, अतः सभी का उल्लेख करना संभव नहीं है और न ही उन तमाम गीतों का वर्णन कर पाना संभव है.

(१) **रिमझिम रिमझिम के ये प्यारे-प्यारे गीत लिए, आयी सुहानी देख प्रीत लिए (फ़िल्म- उसने कहा था-1960),** इस गीत को स्व.शैलेन्द्र ने लिखा था जिसे सलील चौधरी ने संगीतबद्ध किया था, तलक और लताजी की खनकदार आवाज ने माधुर्य घोला था. इस फ़िल्म के कलाकार थे- सुनील दत्त और नंदा.

(२) **हरियाली सावन ढोल बजाता आया** (दो बीघा जमीन). लताजी और मन्ना डे की आवाज,सलील चौधरी का संगीत और गीतकार थे शैलेन्द्र.

(३) **बरसात में हमसे मिले तुम सजन तुमसे मिले हम** (फ़िल्म- बरसात-1949) गीतकार शैलेन्द्र,संगीतकार शंकर-जैकिसन, स्वर शैलेन्द्र और लताजी.

(४) **जिन्दगी भर नहीं भूलेगी वो बरसात की रात (** बरसात की रात-1960).गीतकार साहिर, संगीत रोशन,गायक रफ़ी और कलाकार थे भारतभूषण-मधुबाला.

(५) **सावन के झूले पड़े तुम चले आओ (** फ़िल्म-जुर्माना-1979), गीतकार आनन्द बक्शी, संगीत पंचम दा,स्वर लताजी, कलाकार राखी.

(६) **सावन की रातों में ऎसा भी होता है**(प्रेमपत्र-1962). तलत और लता जी का स्वर, गीतकार गुलजार, संगीत सलील चौधरी, कलाकार- साधना और शशिकपूर.

(७) **रिमझिम गिरे सावन-सुलग-सुलग जाये मन** (मंजिल 1974). लताजी और किशोर दा की अवाज, गीतकार-योगेश, संगीतकार-आर.डी.बर्मन, कलाकार-अमिताभ बच्चन-मौसमी चटर्जी.

(८) **रिमझिम के तराने लेकर आई बरसात (** काला बाजार-1960), गीतकार-शैलेन्द्र, संगीतकार-आर.डी.बर्मन, स्वर-गीतादत्त-मोहम्मद रफ़ी, कलाकर- वहीदा रहमान-देवानन्द.

(९) **उमड़ उमड़ कर आई रे घटा-(** दो आँखें बारह हाथ-).लताजी और मन्ना दा की आवाज, गीतकार-भरत व्यास, संगीतकार वसंत देसाई.

(१०) **डम डम डिगा डिगा मौसम भीगा भीगा (** छलिया-1960). स्वस्र-मुकेश, गीतकार-कमर जलालाबादी, संगीत-कल्याणजी-आनन्द जी, कलाकार- राजकपूर.

(११) **एक लड़की भीगी भागी सी, सोती रातों में जागी सी (** चलती का नाम गाड़ी-1958).गीतकार-मजरुह सुलतानपुरी, संगीतकार-सचिन दा और कलाकार- मधुबाला-किशोर कुमार.

(१२) **जलता है जिया मेरा भीगी भीगी रातों में (** जख्मी-1975). गीतकार- गौहर कानपुरी, संगीत-भप्पी लहरी, स्वर-किशोरकुमार-लताजी. कलाकार-राकेश रोशन-रीनाराय

(१३) **अब के सजन सावन में आग लगेगी बदन में (** चुपके-चुपके-1975) गीतकार-एमजी हशमत, संगीत- शंकर जयकिशन, आवाज- उषा मंगेशकर-किशोर कुमार. कलाकार-धर्मेन्द्र- शर्मिला टैगोर.

(१४) **छतरी न खोल उड़ जाएगी, हवा तेज है (** दो झूठ-1975). गीतकार-एमजी हशमत, संगीत-शंकर-जयकिशन, स्वर- उषा मंगेशकर-किशोर कुमार. कलाकार- विनोद मेहरा-मौसमी चटर्जी.

(१५) **सावन का महिना पवन करे सोर (** मिलन-1967). गीतकर-आनन्द बक्शी, संगीत-लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल, स्वर-लताजी-मुकेश, कलाकार- नूतन-सुनील दत्त.

(१६) **ओ सजना बरखा बहार आई (** परख-1960). गीतकार-शैलेन्द्र, संगीत-सलील चौधरी, स्वर-लताजी, कलाकार-साधना.

(१७) **घर आ जा घिर आए बदरा सांवरिया (** छोटे नवान-1961). गीतकार-शैलेन्द्र, संगीत- आर.डी.बर्मन, स्वस्र -लताजी, कलाकार थीं अमीना

(१८) **अजहू न आये बालमा सावन बीता जाए (** सांझ और सबेरा-1964). गीतकार-हसरत जैपुरी, संगीत-शंकर जयकिशन, आवाज-रफ़ी-सुमन कल्याणपुर, कलाकार- महमूद-शोभा खोटे.

(१९) **लगी आज सावन की फ़िर वो झड़ी है (** चांदनी-1989). संगीतकार-शिव-हरि, गीतकार-आनन्द बक्शी, गायक-सुरेश वाड़कर, कलाकार- विनोद खन्ना.

(२०) **गरजत बरसत सावन आयो अरे (** बरसात की रात-1960). गीतकार-समीर, संगीत- रोशन, आवाज-सुमन कल्याणपुर-कमल बारोत. कलाकार-श्यामा-रत्ना.

फ़िल्मों की फ़ेहरिस्त काफ़ी लंबी है फ़िर भी कुछ प्रमुख हैं- दिल दिया दर्द लिया(1966) , सावन को आने दो (1979), आया सावन झूम के (1969), नया जमाना (1971), नमक हलाल (1982), 1942 ए लव स्टोरी (1994), आजाद (1955), बेताब (1983), चश्मे बद्दुर (1981), अजनबी- (1974), यलगार (1992), दिलवाले दुल्हनियां ले जायेंगे (1995), दिल तो पागल है (1997), लगान (2001) आदि फ़िल्मों को याद किया जा सकता है, जिसमें बादल गरजते-बरसते तो हैं ही, साथ ही सुमघुर हिन्दी गीतों की बरसात लिए हुए हमारे बीच आते हैं.

सावन मैना आइ तुलाना...घर-घर सखि हिंडोला ताना
कंत सुहागिन झूलै बारी.....गाए गीत उठत झनकारी
हरिभर भूमि कुंसुंभी रतनारि...नाइ सरीस्यऊं खेल धमारी
मधुर मौज घन गरज हीं झीनी परै पुहाउ..प्रेम हिंडोला झूल हीं गावैं मंगलाचार

उपरोक्त पंक्तियों का पुनर्पाठ किया जाना मुझे जरुरी लगता है. इन पंक्तियों में " हरियर भूमि कुंसुंभी रतनारी" का वर्णन आता है. हमारा दुर्भाग्य है कि आज हम इसी "हरियर" भूमि की हरियाली छीनने का दुष्चक्र चला रहे हैं. इसे "कुंसुंभी" नहीं रहने देना चाहते और इसे "रतनारी" बनाये रखने में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं. यदि भूमि से उसका "वैभव" छीन लिया गया तो फ़िर कौन से झूले तनेंगे और कहाँ से निश्छल प्यार की सौगात सामने आ सकेगी?. फ़िर कहाँ का धर्म और कहाँ का मंगलाचरण?. सभी जगह बनावटीपन आ जाएगा. प्रकृति और पुरुष का अलगाव वस्तुतः सृष्टि के लिए अत्यन्त ही पीड़ादायक सिद्ध होगा. पर मानव और प्रकृति यदि मिलकर साथ चलेंगे तो झूले डाले जाएंगे, गीत गाए जाएंगे, धमार खेली जाएगी, प्रेम में गुपचुप बातें चलेंगी, सखी सहेलियों की हंसी ठिठौलियाँ और वाध्यों की झनकार वातावरण को रसीली बनाती रहेगी. पर हम ऎसा होने दें तब न !. हम तो हाथ धोकर स्वयं अपने ही पीछे पड़े हुए हैं. कालिदास बने पेड़ पर बैठे अपनी ही डाली को काटे जा रहे हैं? सभ्य कहे जाने वाले इन्सानों की भीतरी असभ्यता का यह महा-विनाश-रास न जाने कब जाने बंद होगा?. अगर समय रहते ध्यान नहीं दिया गया और प्रकृति के साथ हो रहे खिलवाड़/विनाश को नहीं रोका गया तो भविष्य़ में आने वाली हमारी पीढ़ियाँ हमें कभी माफ़ नहीं करेंगी. क्या हम उन्हें धरोहर के रूप में वृक्ष-विहीन धरती.... हरियाली रहित धरती... बिन पानी

की धरती... रुखी-सूखी धरती देना चाहेंगे

वेदों और पुराणों में वृक्षारोपण की महिमा

मत्स्य पुराण में अनेकानेक प्रकार के वृक्षों की महिमा एवं सामाजिक जीवन के महत्व में बारे में वर्णण करते हुए वृक्षों को लगाने से कौनवृक्षों की महिमा का .विस्तार से दिया गया है ,फ़ल प्राप्त होते हैं-कौन से पुण्य- " -हुए कहा गया है कि बखान करतेदस कुओं के बराबर एक बावड़ीदस ,दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब , ,तालाबों के बराबर एक पुत्र और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष होता है-१० भविष्य पुराण के अध्याय .११ में विभिन्न वृक्षों को लगाने और उनका पोषण करने के बारे में वर्णन किया गया है "-जो व्यक्ति छायाफ़ूल और फ़ल देने , वाले वृक्षों का रोपण करता है या मार्ग में तथा देवालय में वृक्षों को लगाताहैबड़े पापों से -वह अपने पितरों को बड़े , अतः वृक्ष लगाना .तारता है और रोपणकर्ता इस मनुष्यलोक में महती कीर्ति तथा शुभ परिणाम प्राप्त करता है वृक्षारोपणकर्ता इस मनुष्यलोक में महति .उसके लिए वृक्ष ही पुत्र है ,जिसको पुत्र नहीं है .शुभदायक है अत्यन्त कीर्ति तथाशुभ परिणाम प्राप्त करता हैउसके ,जिसको पुत्र नहीं है .अतः वृक्ष लगाना अत्यन्त ही शुभदायक है . .लिए वृक्ष ही पुत्र है

भारतीय जन जीवन में वृक्षों को देवता की अवधारणा परम्परा के फ़लस्वरुप इनकी पूजाअर्चना की जाती - भगवान श्रीकृष्ण जी ने विभूतियोग में गीता मे .है कहकर वृक्षों की महिमा का गान "अश्वत्थः सर्व वृक्षाणाम" नागर ,एकान्यपुराण .किया है247/41-42-44 के अनुसार) "अश्वस्थ"पीपलशाखाओं में ,वृक्ष के तने में केशव (" .पत्तों में श्री हरि और फ़लों में सब देवताओं से युक्त अच्युत सदा निवास करते हैं ,नारायणभगवतपुराण "3/4/8

के अनुसार द्वापरयुग में श्रीकृष्ण जी इसी वृक्ष के नीचे ध्यानावस्थित हुए थेभगवान बुद्ध को सम्बोधिकी प्राप्ति . .नीचे ही प्राप्त हुई थी गया में पीपल के वृक्ष के-बोध मत्स्यपुराण के 101 वें अध्याय तथा पद्मपुराण सृष्टिखण्ड , अध्याय20 में प्रकीर्ण वृत करने वालों को प्रातः अश्वस्थ वृक्ष का पूजन करना अनिवार्य बताया है) भविष्य पुराण . उत्तरपर्व 114/39-42)- के अनुसार दधीचि ऋषि के पुत्र महर्षि पिप्पलाद ने जो अथवर्ण पैप्पलाद संहिता के द्रष्टा हैं , पीपल के पेड़ के नीचे ही तपस ,जो पीपल वृक्ष द्वारा ही पालित हुए्या की.

हमारे पुराणों में केवल पीपल के वृक्ष और वटवृक्ष का ही गुणगान नहीं किया है बल्कि अनेकानेक वृक्षों को अशोक का पेड़ लगाने -जैसे .वाले अमुल्य वरदानों की भी चर्चा की गई है अर्चना करने से मिलने-लगाने और पूजा वृक्ष स्त्री प्रदान करव-पाकड़ ,से शोक नहीं होताात हैबिल्व वृक्ष दीर्घ आयु प्रदान .ज्ञान रुपी फ़ल भी देता है . .सुख प्राप्त कराता है-अनार का वृक्ष स्त्री .तेंदू का वृक्ष कुलवृद्धि कराता है ,जामुन का वृक्ष धन देता है .करता है आम्र वक्ष अभीष्ट कामनाप्र ,वटवृक्ष मोदप्रद .वजुल बलबुद्धिप्रद है ,बकुल पाप नाशकद और गुवारी (सुपारीवृक्ष (मधुक ,वल्लल .सिद्धिप्रद है(महुआकदम्ब वृक्ष से विपुल .वृक्ष सब प्रकार का अन्न प्रदान करता है-तथा अर्जुन (केशर से शत्रुओं का .वृक्ष रोगनाशक है-शमी .इमली का वृक्ष धर्म दूषक माना गया है .प्राप्ति होती है लक्ष्मी की स .विनाश होता है्वेत वट धन प्रदानवृक्ष के -एवं कदम (केवांच) मर्कटी .वृक्ष मन्द बुद्धिकारक है (कटहल) पनस , वृक्षों के अरोपण से स्वर्ग की -तथा पलाश ,बेल ,करवीर ,जयन्ती ,अर्जुन ,शीशम .लगाने से संतति का क्षय होता है .प्राप्ति होती है

वृक्ष का अपना विशेष महत्त्व-वृक्षों में वटहै .पुराणॊं मे उल्लेखित हैं कि इसमें देवताओं का वास होता है . अनेकानेक .अर्चना करने से सति सावित्री ने अपने मृत पति को यमराज के फ़ंदे से छुड़ा लाया था-इस वृक्ष की पूजा .ग्रंथों में इस वृक्ष की महिमा का गान किया है

वटवृक्ष की महिमा.

वटवृक्ष को देवताओं का वृक्ष अर्थात देववृक्ष कहा गया हैमध्य में जनार्दन ,इस वृक्ष के मूल में भगवान ब्रह्मा . .देवी सावित्री भी इसी वटवृक्ष में प्रतिष्ठित रहती हैं .विष्णु तथा अग्रभाग में देवाधिदेव महादेव स्थित रहते हैं

वटाग्रे तु शिवो दे * वटमध्ये जनार्दनः ,वटमूले स्थितो ब्रह्मा“व सावित्री वटसंश्रिता.

इसी अक्षयवट के पत्रपुटक पर प्रलय के अन्तिम चरण में भगवान श्री कृष्ण ने बालरुप में मार्कण्डॆय ऋषि **”** .था को प्रथम दर्शन दिया**वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं बाल मुकुन्दं मनसा स्मरामि”**

प्रयागराज में गंगा के तट पर वेणीमाधव के निकट ”अक्षयवट“प्रतिष्ठित हैभक्त शिरोमणि तुलसीदास जी ने . .वट को तीर्थराज का छत्र कहा है-स्थित इस अक्षय-संगम**संगमु सिंहासनु सुठि सोहा छत्रु अखयबटु मुनि मनु.*.** (७/१०५/मा.२.च.रा) **.मोहा**

इसी प्रकार तीर्थों में पंचवटी का भी वि*शेष महत्त्व है* **.पांच वट वृक्षों से युक्त स्थान को पंचवटी कहा गया है .** कुम्भजमुनि के परामर्श से भगवान श्रीराम ने सीता जी एवं लक्षमण के साथ वनवास काल में यहीं निवास किया था .

उग्र साप मुनिवर कर हर *दंडक बन पुनीत प्रभु करहू //पावन पंचवटी तेहि नाऊँ * है प्रभु प्ररम मनोहर ठाऊँ"हू.

वास करहु तहँ रघुकुल राया.तरतहि पंचवटी निअराई *चले राम मुनि आयसु पाई//कीजे सकल मुनिन्ह पर दाया)

अगस्त मुनि ने श्रीरामजी से कहा कि यह एक अत्यन्त पवित्र स्थान हैदंडक ! हे प्रभो .जिसका नाम पंचवटी है , वन को पवित्र कीजिए और गौतम ऋषि के श्राप को तुरन्त हरियेआप वहां जाकर निवास कीजिए ! हे रघुनाथ . .श्री रामजी मुनि की आज्ञा पाकर चले और फ़िर तुरन्त ही पंचवटी के समीप गए .और सब मुनियों पर दया करिये -दोहा**गीधराज सैं भेंट भै**गोदावरी के निकट) **.रहे परन गृह छाइ, गोदावरी निकट प्रभु .बहु बिधि प्रीति बढ़ाइ ,** पंचवटी में प्रभु ने निवास किया(.

वाल्मिक रामायण- श्रीराम के पूछने पर महर्षि अगस्त ने उन्हें पंचवटी में आश्रम बनाकर रहने का आदेश दिया और मार्ग भी बतलाया.

**एतदाल्क्ष्यते वीर मधूकानां महावनमततः स्थलमुपारुह्या *उत्तरेणास्य गन्तव्यं न्यप्रोधमपि गच्छता *
ख्यात *पर्वतस्याविदूरतः पंचवटीत्येव नित्यपुष्पितकाननः**

अर्थातउस मार्ग से जाते .उसके उत्तर से होकर जाना चाहिए ,यह जो महुओं का विशाल वन दिखाई देता है ! वीर - उसे पार करने के बाद एक पर्वत ,उससे आगे कुछ दूर ऊँचा मैदान है .वृक्ष मिलेगा हुए आपको आगे एक बरगद का उस पर्वत से .दिखायी देगाथोड़ी ही दूरी पर पंचवटी नाम से प्रसिद्ध सुन्दर वन हैजो सदा फ़ूलों से सुशोभित , .रहता है

तबसे यह व्रत .इसी वटवृक्ष के नीचे सावित्री ने अपने पतिव्रत से मृत पति को पुनर्जीवित किया था **वट-सावित्री**के नाम से जाना जाता है" ज्येष्टमास के व्रतों में .**वटसावित्री"व्रत-** एक प्रभावी व्रत हैइसमें वटवृक्ष की पूजा . सौभाग्यवती महिलाएं श्रद्धा .महिलाएं अपने अखण्ड सौभाग्य एवं कल्याण के लिए यह व्रत करती हैं .की जाती है **" .**के साथ ज्येष्ट कृष्ण त्रयोदशी से अमावस्या तक तीन दिनों का उपवास रखती हैं**मम वैधव्यादिसकलदोषपरिहारार्थ ब्रह्मसावित्रीप्रीत्यर्थं सत्यवत्सावित्रीप्रीत्यर्थं च वटसावित्रीव्रतमहं करिष्ये,"** इस प्रकार संकल्प करते हुए वरदान प्राप्त करती हैं कि उनका सुहाग बना रहेपूजन की समाप्ति पर स्त्रियां उसके .वे यम का भी पूजन करती हैं साथ ही . मूल को जल से सींचती हैं और उसकी परिक्रमा करते समय एक सौ आठ बार या यथाशक्ति सूत लपेटती हैं . मृत कथा में वर्णित हैं कि इस वृक्ष की पूजा करने से सावित्री ने अपने .सावित्री की कथा का पाठ करती हैं-सत्यवान .पति को यमराज के फ़ंदे से छुड़ा लायी थी

<u>संस्कृत काव्य धारा में प्रकृति की आदिम सुवास</u>.

संस्कृत साहित्य में,विषेशकर उसकी काव्य परम्परा मे वेदव्यास, वाल्मिकि, भवभूति, भारवि, श्रीहष, बाणभट्ट,कालीदास आदि महाकवियों ने प्रकृति की जो रसमयी झांकि प्रस्तुत की है,वह अनुपम-अतुलनीय तथा अलौकिक है. उसकी पोर-पोर में कुदरत की आदिम सुवास है-मधुर संस्पर्श है और अमृतपायी जीवन दृष्टि है .प्रकृति में इसका लालित्य पूरी निखार के साथ निखरा और आज यह विश्व का अनमोल खजाना बन चुका है. सच माना जाय तो प्रकृति,संस्कृत काव्य की आत्मा है--चेतना है और उसकी जीवन शक्ति है. काव्यधारा की इस अलौकिक चेतना के पीछे जिस शक्ति का हाथ है,उसका नाम ही प्रकृति है.

पृथ्वी से लेकर आकाश तक तथा सृष्टि के पांचों तत्व निर्मल और पवित्र रहें, वे जीव-जगत के लिए हितकर बने रहें, इसी दिव्य संदेश की गूंज हमें पढने-सुनने को मिलती है.

महाभारत में हमें अनेक स्थलों पर प्राकृतिक सौंदर्य की अनुपम छटा देखाने को मिलती है. महाभारत के आरण्यक पर्व ३९/.१९ की एक बानगी देखिए.

मनोहर अनोपेता स्तस्मिन्न तिरथोर्जुनः "
पुण्य शीतमलजलाः पश्यन्प्रीत मनाभवत

कलकल के स्वर निनादित कर बहती नदियाँ, नदियों में बहता शीतल स्वच्छ जल, जल में तैरते-अलौकिक आनन्द मे डूबे हंस, नदी के पावन पट पर अठखेलियां करते सारस, क्रौंच,कोकिला, मयूर, मस्ती में डोलते मदमस्त गेंडे, वराह, हाथी, हवा से होड लेते मृग, आकाश को छूती पर्वत श्रेणियां, सघन वन,वृक्षों की डालियों पर धमाचौकडी मचाते शाखामृग,चिंचियाते रंग-बिरंगे पंछी, जलाशयों में पूरे निखार के साथ खिले कमल-दल, कमल के अप्रतिम सौंदर्य पर मंडराते आसक्त भौंरों के समूह, तितलियों का फ़ुदकना आदि को पढकर आदिकवि के काव्य कौशल को देखा जा सकता है.

तो पश्य मानौ विविधन्च शैल प्रस्थान्वनानिच
नदीश्च विविध रम्या जग्मतुः सह सीतभा
सार सांश्चक्रवाकांश्च नदी पुलिन चारिणः
सरांसि च सपद्मानि युतानी जलजै खगैः
यूथ बंधाश्च पृषतां मद्धोन्मत्तान्विषाणि नः
महिषांश्च वराहंश्च गजांश्च द्रुमवैरिणः (<u>रामायण- अरण्यकांड सर्ग ११(२-४)</u>

राम अपने बनवास के समय एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं, तो मार्ग मे अनेक पर्वत प्रदेश, घने जंगल, रम्य नदियाँ, और उनके किनारों पर रमण करते हुए सारस और चक्रवाक जैसे पक्षी, खिले -खिले कमलदल वाले जलाशय और अपने-अपने जलचर, मस्ती मे डोलते हिरणों के झुण्ड, मदमस्त गैंडे, भैंसे, वराह, हाथी, न सुरक्षा की चिन्ता, न किसी को किसी का भय, वाल्मिकी ने रामायण में जगह-जगह प्रकृति के मधुरिम संसार का वर्णण किया है.

भवभूति के काव्य में प्राकृतिक सौंदर्य देखते ही बनता है. लताएं जिन पर तरह-तरह के खिले हुए पुष्प सुवास फ़ैला रहे हैं .शीतल और स्वच्छ जल की निर्झरियां बह रही है. भवभूति ने एक ही श्लोक में जल, पवन, वनस्पति एवं पक्षियों का सुंदर वर्णण प्रस्तुत किया है.

माघ के काव्य में तीन विशिष्ठ गुण है. उसमें उपमाएं हैं.अर्थ गांभीर्य है और सौंदर्य सृष्टि भी. कहा जाए तो वे उपमाओं के राजा हैं. विशेष बात यह है कि उन्होंने अधिकांश उपमाएं प्रकृति के खजाने से ही ली है.

शिशुपाल वध में अनेक ऎसे स्थल हैं जिनमें प्राकृतिक सौंदर्य और स्वच्छ्र पर्यावरण का उल्लेख मिलता है. " काली रात के बाद भॊला प्रकाश आ रहा है .उसके गोरे-गोरे हाथ-पांव ऎसे लगते हैं मानो अरुण कमल हों. भौंरे ऎसे हैं जैसे प्रभात के नीलकमल नेत्रों के कज्जल की रेखाएं हों. सांध्य पक्षियों के कलरव में मस्त हुई यह भोली बालिका(प्रभात) रात के पीछे-पीछे चलकर आ रही है(शिशुपाल वध ६;२८)

महाकवि भारवि के ग्रंथ " किरातार्जुनीय " में अनेक उपमाएं, शृंगार प्रधान व सौंदर्यपरक रुपक है. वन में प्रवाहित नव पवन कदम्ब के पुष्पों की रेणु द्वारा आकाश को लाल कर रहा है. उधर पृथ्वी, कन्दली के फ़ूलों के स्पर्ष से सुगन्धित हो रही है. ये दोनो दृष्य अभिलाषी पुरुषों के मन को का-मनियो के प्रति आकक्त करने वाले हैं. नवीन वनवायु अपने आप ही शुद्ध वायु की ओर संकेत कराने वाला शब्द है. उधर धरती सुगंधित है, मन चंचल हो रहा है.(९)

(९) नवकदम्ब जोरुणिताम्बैर रधि पुरन्धि शिलान्ध सुगन्धिभिः
मानसि राग वतामनु रागिता नवनवा वनवायु भिरादे धे !!

वन में प्रवाहित नव पवन कदम्ब के पुष्पों की रेणु द्वारा आकाश को लाल कर रहा है. उधर पृथ्वी कन्दली के फ़ूलों के स्पर्श से सुगन्धित हो रही है. ये दोनों दृष्य अभिलाषी पुरुषों के मन को कामनियों के प्रति आसक्त करने वाले हैं.

प्रकृति के लाडले कवि कुमारदास द्वारा रचित" जानकी हरण "प्राकृतिक सौंदर्य एवं उपमाओं के भण्डार से भरा हुआ है. अतीत की निष्कलंक एवं पवित्र प्राकृतिक , प्रायः सभी जगह बिखरी पडी है. कई स्थानों पर मार्मिक मानवीकरण भी है.

कुदरत की मादक गोद में विचरण करते राजा दशरथ की मनःस्थिति का वर्णण करते हुए कवि लिखता है " राजा ने नदी के उस तट पर विश्राम किया, जहाँ मंद पवन बेंत की लताओं को चंचल कर रहा था. सुखद पवन गंधी की दुकान की सुगंध जैसा सुगंधित था. वह सारस के नाद को आकष्षित करने वाला था. नीलकमलों के पराग को उडा-उडाकर उसने राजा के शरीर कॊ पीला कर दिया". यह पढकर लगता है कि हम किसी चित्र-संसार की सलोनी घटना को प्रत्यक्ष देख रहे हैं.

श्रीहर्ष ने अपनी कृति " नैषधिय़" में प्रकृति के सलोने रुप का वर्णण किया है. इस दृष्य को उन्होंने राजा नल की आँखों के माध्यम से देखा था. नल ने भय और उत्सुकता से देखा. क्या देखता है कि जल में सुगंध फ़ैलाने वाला पवन जिस लता को चूम-चूम कर आनन्द लेता है,वही लता (जॊ मकरन्द के कणॊं से युक्त है.) आज अपनी ही कलियों में मुस्कुरा रही है. एक चित्र और देखिए--

"फ़लानि पुष्पानि च पल्ल्वे करे क्योतिपातोद गत वातवेपिते"

वृक्षों ने अपने हाथों में पुष्प और फ़ल लेकर राजा का स्वागत किया. ऊपर की ओर पक्षियों की फ़ड-फ़डाहट से हवा में होने वाले कम्पन से शाखाएं हिल रही थीं. पढकर ऎसा लगता है कि वृक्षों ने अपने इन्ही हाथों (शाखाओं) में पुष्प और फ़ल लेकर राजा का स्वागत किया हो.

वाणभट्ट ने अपनी कृति" कादम्बरी" में अगस्त्य मुनि के आश्रम के पास, पम्पा सरोवर का वर्णण करते हुए लिखा है" सरोवर में कई प्रकार के पुष्प हैं. जैसे- कुसुम ,कुवलय और कलहार. कमल इतने प्रमुदित है कि उसमे मधु की बूंदे टपक रही है. और इस तरह कमल-पत्रों पर चन्द्र की आकृतियां बन रही है. सफ़ेद कमलों पर काले भवरों का मंडराना अंधकार का आभास देता है. सारस मस्त हैं. मस्ती में कलरव कर रहे हैं. उधर कमल रस का पान करके तृप्त हुई कलहंस भी मस्ती का स्वारालाप कर रही है. जलचरों के इधर से उधर डोलने से तरंगे उत्पन्न हो रही है. मानो मालाएं हों. हवा के साथ नृत्य करती हुई तरंगे वर्षा ऋतु का सा दृष्य उत्पन्न कर रही है.

सुंदर लवंग लता की शीतलता लिए हुए कोमल और मृदु मलय पवन चलता है. मस्त भौंरों और कोयल वृंदो के कलरव से कुंज- कुटीर निनादित है. युवतियां अपने प्रेमियों के साथ मस्त होकर नृत्य करती हैं. स्वयं हरि विचरण करते हैं.-ऎसी वसन्त ऋतु, विरहणियों को दुःख देने वाली है.

वसंत ऋतु का ऎसा सजीव चित्रण जो मस्ती से लेकर, संताप की एक साथ यात्रा करवाता है.

कालिदास ने कवि और नाटककर दोनों रूपों में अद्भुत प्रतिष्ठा प्राप्त की. उन्होंने प्रकृति के अद्भुत रुपों का चित्रण किया है. सरस्वती के इस वरद-पुत्र्र ने भारतीय वाड;गमय को अलौकिक काव्य रत्नों एवं दिव्य कृतियों से भरकर उसकी श्रीवृद्धि की है.

रघुवंश के सोलहवें सर्ग में प्राकृतिक छटा का जो श्लोक है उसका भावार्थ यह है कि वनों में चमेली खिल गई है जिसकी सुगन्ध चारों ओर फ़ैल रही है. भौंरे एक-एक फ़ूल पर बैठकर मानों फ़ूलों की गिनती कर रहे हैं.". वसन्त का चित्रण करते हुए एक कवि ने सजीव एवं बिम्बात्मक वर्णण किया है-" लताएं पुष्पों से युक्त हैं, जल में कमल खिले हैं, कामनियां आसक्ति से भरी है, पवन सुगन्धित है, संध्याएं मनोरम एवं दिवस रम्य है, वसन्त में सब कुछ अच्छा लगता है".

शकुन्तला के बिदाई के समय के चित्र को देखिए-" हे वन देवताओं से भरे तपोवन के वृक्षों ! आज शकुन्तला अपने पति के घर जा रही है. तुम उसे बिदाई दो. शकुन्तला पहले तुम्हें पिलाए बिना खुद पानी नहीं पीती थी, आभूषणों और शृंगार की इच्छा होते हुए भी तुम्हारे कोमल पत्तों को हाथ नहीं लगाती थी, तुम्हारी फ़ूली कलियों को देखकर खुद भी खुशी से फ़ूल जाती थी, आज वही शकुन्तला अपने पतिगृह जा रही है. तुम उसे बिदाई दो".

संस्कृत काव्यधारा में फ़ूलों की आदिम सुवास का अनमोल खजाना ,अपने पूरे लालित्य के साथ समाया हुआ है. प्रकृति के इन विभिन्न आयामों की रचना करने का उद्देश्य ही पर्यावरण संरक्षण रहा है. आज स्थितियां एकदम विपरीत है. जंगलों का सफ़ाया तेजी से हो रहा है. विकास के नाम पर पहाडों का भी अस्तित्व दांव पर लग चुका है. प्रकृति हमारे लिए सदैव पुज्यनीय रही है. भारतीय मुल्य प्रकृति के पोषण और दोहन करने का है, न कि शोषण करने का. वनों ने सदा से ही संस्कृति की रक्षा की है. पूरे पौराणिक और ऎतिहासिक तथ्य इस बात के साक्षी हैं कि जब तक हमनें वन को अपने जीवन का एक अंग माना, तब तक हमें कभी पश्चाताप नहीं करना पडा. आज वनों की अंधाधुंध कटाई से पर्यावरण संतुलन गडबडा गया है. विभिन्न विभाग तथा संस्थाएं इस प्रयास में लगी तो हैं लेकिन उनमें समन्वय की कमी दिखलाई पडती है. काफ़ी प्रचार-प्रसार के बाद भी इच्छित परिणाम नहीं मिल पा रहे हैं. यदि हम पर्यावरण को जन-जन से जोडना चाहते हैं तो आवश्कता इस बात की है कि हमें इसे पाठ्यक्रम में उचित स्थान देना होगा.

विश्व पर्यावरण दिवस

विश्व पर्यावरण दिवस संयुक्त राष्ट्र द्वारा सकारात्मक पर्यावरण कार्य हेतु दुनिया भर में मनाया जाने वाला सबसे बड़ा उत्सव है. पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से निपटने के लिए सन 1972 में स्टाकहोम (स्वीडन) में विश्व भर के देशों का पहला पर्यावरण सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें करीब 119 देशों ने भाग लिया और पहली बार एक ही पृथ्वी का सिद्धांत मान्य किया. इसी सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम का जन्म हुआ तथा प्रति वर्ष 5 जून को पर्यावरण दिवस आयोजित करके नागरिकों को प्रदूषण की समस्या से अवगत कराने का निश्चय किया गया. इसका मुख्य उद्देश्य पर्यावरण के प्रति जागरुकता लाते हुए राजनैतिक चेतना जागृत करना और आम जनता को प्रेरित करना था. उक्त गोष्ठी में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने "**पर्यावरण की बिगड़ती स्थिति एवं उसका विश्व के भविष्य पर प्रभाव"** विषय पर व्याख्यान दिया था. तभी से हम प्रति वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाते आ रहे हैं

19 नवम्बर 1986 से पर्यावरण संरक्षण अधिनियम लागु हुआ. तदानुसार जल, वायु, भूमि-इन तीनों से संबंधित कारक तथा मानव,पौधों, सूक्षम जीव अवं अन्य जीवित पदार्थ आदि पर्यावरण के अतर्गत आते है. पर्यावरण संरक्षण अधिनियम के कई महत्वपूर्ण बिंदु है जैसे- पर्यावरण की गुणवत्ता के संरक्षण हेतु आवश्यक कदम उठाना (*) पर्यावरण प्रदूषण के निवारण, नियंत्रण और उपशमन हेतु राष्ट्रव्यापि कार्यक्रम की योजना बनना और उसे क्रियान्वित करना.(*) पर्यावरण की गुणवत्ता के मानक निर्धारित करना (*) पर्यावरण सुरक्षा से संबंधित अधिनियमों के अंतर्गत राज्य सरकारों, अधिकारियों और संबंधितों के काम में समन्वय स्थापित करना,(*) ऎसे क्षेत्रों का परिसिमन करना, जहाँ किसी भी उद्योग की स्थापना अथवा औद्दोगिक गतिविधियाँ संचालित न की जा सकें आदि-आदि (*) उक्त अधिनियम का उल्लंघन करने पर कठोर दंड का प्रावधान करना.

1972 की तुलना में 2018 का परिदृष्य काफ़ी बदला-बदला सा है. आज विश्व संगठन पर्यावरण प्रदूषण को अपनी मुख्य चिंता मानने लगा है. इसमें संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम, खाद्य एवं कृषि संगठन और विश्व मौसम विज्ञान संगठन आदि प्रमुख हैं. अन्य देशों की तरह ही भारत भी इस बात को लेकर चिंतित है कि धरती अधिक गरम होती जा रही है. ओजोन की परत पतली पड़ती जा रही है. अम्लीय वर्षा और समुद्री प्रदूषण भयावह रुप धारण करता जा रहा है तथा जैविक संपदा संकट के कगार पर पहुंचती जा रही है.

एक गरम मिजाज का व्यक्ति जहाँ वह स्वयं को नुकसान पहुँचा सकता है और दूसरों के लिए परेशानी खड़ी कर सकता है. उस समय क्या होगा जब भूमंडल का मिजाज गरम होने लगेगा?, इसके लिए विकसित देश जिम्मेदार हैं और जिसका खामियाजा विकासशील देशों को भुगतना पड़ता है. ग्रीन हाऊस गैसों का असीमित निष्क्रमण संसार भर की साझी चिंताओं के केन्द्र में है. यदि वे इन चिंताओं को मिटाने के आर्थिक उपाय करने लगेंगे, तो उनकी रीढ़ की हड्डी ही लचक जाएगी. कहाँ से लाएंगे वे इतने अधिक उपचारात्मक संसाधन? विकसित देशों के खजाने तो लबालब भरे पड़े है, पर बेचारे विकासशील देशों के पास न तो ऎसी उन्नत प्रोद्दोगिकी है और न ही धन की छूट कि वे प्रदूषण के शमन के उपाय कर सकें. साथ ही विकास को रोकने का मतलब है शनि की साढ़े साती का न्योता. उधर प्रदूषण के साथ विकास करना भी कोढ़ में खाज की तरह कष्टप्रद है. बदलती जलवायु भी इन देशों की पीड़ा में इजाफ़ा कर रही है. आखिर वे करें भी तो क्या करें?

समुद्र को सदा से ही गंभीर माना गया है, पर समय-असमय रौद्र रूप धारण कर वह इंसान को चेताता भी रहता है कि उसकी शांति का बेजा फ़ायदा न उठाया जाए. गरम होती हुई धरती और ग्रीन हाऊस गैसों का प्रभाव आखिर समुद्र में खलबली मचाएगा ही. तब एक ऎसा भीषण उफ़ान आएगा कि किनारे बसे नगरों और शहरों के लोगों को जल समाधि लेनी होगी. ऊँचे-ऊँचे भवनों को छॊड़ भी दें, तो झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले लोग, जिन्हें दिन में केवल बार खाना नसीब होता है, उनका क्या होगा?

जंगलों के बीच से होकर जाती हुई चौड़ी-चौड़ी सड़कें और वनों के मध्य स्थापित धुंआ उगलती चिमनियों से निकलता जहर, क्या प्रकृति को नुकसान नहीं पहुँचा रहा हैं? वृक्ष विहीन बंजर जमीन का फ़ैलाव, बंजर सपनों जैसा ही है. विकासशील देशों के आकाओं ने इस सत्य को पहचान लिया है और वे इसे मिटाने में लगे हुए हैं. जंगल फ़िर से घने हों इसके लिए दो बातें आवश्यक है. एक- इसके लिए विकसित देश आर्थिक और प्रोद्दोगिकी की सहायता में विकासशील देशों की मदद करें तथा दूसरे- विकासशील देशों की वन संपदा को छीनने का प्रयास न करें. वन हर उस देश की नीजि संपत्ति है, अन्तरराष्ट्रीयता के नाम पर उसे विश्व की साझा संपत्ति बनाने की कुचेष्टा न करें. वे भला क्यों अपने वनों को दूसरों को सुपुर्द कर देंगे?

पर्यावरण की रक्षा और विकास की इच्छा दोनों का जन्म ही एक ही कोख से हुआ है. दोनों की भाग्य रेखा भी समान है. इसमें से कोई एक बीमारे पड़े तो दूसरा भी बीमार पड़ जाएगा. कोई ऐसा ठोस उपाय किया जाना चाहिए जिससे पर्यावरण को मैत्री का संदेश पहुँच सके.

पर्यावरण की रक्षा के लिए मृदा, जल, वायु और ध्वनि प्रदूषण की रोकथाम अनिवार्य है. भूमि प्रदूषण के मुख्य कारक वनों का विनाश तो है ही, साथ ही रासायनिक खादों के मनमाने प्रयोग से भूमि प्रदुषित हो रही है. इसके कारण भूमि को लाभ पहुंचाने वाले मेंढक व केंचुआ जैसे जीव नष्ट हो रहे हैं. जो फ़सलों को नुकसान पहुँचाने वाले कीड़े-मकोडों से बचाव में यही जीव सहायक होते हैं. अतः कृषि फ़सल में एलगी, कम्पोस्ड खाद तथा हरी खाद का उपयोग किया जाना चाहिए, ताकि खेतों में ऎसे जीवों की वृद्धि हो सके जो खेतों की उर्वरा शक्ति बढ़ाते हैं.

पृथ्वी का तीन चौथाई हिस्सा जलमग्न है फ़िर भी करीब 0.03 फ़ीसदी जल ही पीने योग्य है. विभिन्न उद्धोगों और मानव बस्तियों के कचरे ने जल को इतना प्रदूषित कर दिया है कि पीने के करीब ०.03 फ़ीसदी जल में से मात्र

करीब 30 फ़ीसदी जल ही वास्तव में पीने लायक रह गया है. जल प्रदूषण से अनेक बीमारियां जैसे- पेचिस, खुजली, हैजा, पीलिया आदि फ़ैलते हैं. चूंकि अब जल संकट और गंभीर रूप धारण कर चुका है. अतः जल-स्त्रोतों को सूखने से बचाने के साथ-साथ, जल-प्रदूषण को रोकने के उपाय भी करने होंगे. निरन्तर बढ़ती जनसंख्या, पशु संख्या, औद्धोगीकरण, जल स्त्रोतों के दुरुपयोग, वर्षा में कमी आदि कारणो से जल-प्रदूषण ने उग्र रूप धारण कर लिया है. नदी के किनारे बसे नगरों में जले-अधजले शव तथा मृत जानवर नदी में फ़ेंक दिए जाते है. कृषि उत्पाद बढ़ाने के लिए उपयोग में लाए जा रहे रासायनिक खाद एवं कीटनाशक, वर्षा जल के साथ बहकर अन्य जल-स्त्रोतों में प्रदूषण फ़ैलाते हैं. नदियों, और जलाशयों में कपड़े धोने, कचरा-कूड़ा फ़ेंकने व मल-मूत्र विसर्जित करने से भी यह स्थिति पैदा हुई है. इस पर तत्काल कार्यवाही की जानी चाहिए और जन जागृति के प्रयत्न किए जाने चाहिए.

ध्वनि प्रदूषण भी कम घातक नहीं है. वायु में 78 प्रतिशत नाइट्रोजन, 21 प्रतिशत आक्सीजन, 0.03 प्रतिशत कार्बन डाइआक्साइड तथा शेष निष्क्रीय गैसें और जल वाष्प होती है. हवा में विद्यमान आक्सीजन ही जीवधारियों को जीवित रखता है. मनुष्य सामान्यतः प्रतिदिन बाईस हजार बार सांस लेता है और सोलह किलोग्राम आक्सीजन का उपयोग करता है जो कि उसके द्वारा ग्रहण किये जाने वाले भोजन और जल की मात्रा से बहुत अधिक है. वायुमंडल में आक्सीजन का प्रचुर भंडार है, किंतु औद्दोगिक प्रगति के कारण वह प्रदूषित हो चला है. घरेलू ईंधन, वाहनों की बढ़ती संख्या और औद्धोगिक कारखाने इसके लिए जिम्मेदार हैं. इससे निपटने के लिए कोयला, डीजल व पेट्रोल का उपयोग विवेक-पूर्ण ढंग से होना चाहिए. कारखानों की चिमनियों की ऊँचाई बढ़ाने के साथ-साथ उनमें फ़िल्टर भी लगाए जाने चाहिए. और समय-समय पर जन जागृति के लिए टीव्ही, रेडियों पर चेतावनी प्रसारित करने के अलावा नुक्कड़-चौपालों पर इसकी चर्चा करनी चाहिए. यह समय की मांग है. बावजूद इसके आदमी नहीं चेता, तो समझिए कि वह अकाल मौत को आमंत्रण दे रहा है.